राष्ट्र की सेवा में परमाणु

एनपीसीआईएल
NPCIL

ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION

न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Nuclear Power Corporation of India Limited

अणुमाला

हिंदी गृह पत्रिका (छःमाही)

अंक–75, जुलाई, 2024 से दिसंबर 2024 तक

न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

काकरापार गुजरात स्थल

(आईएसओ 9001, 14001 और आईएस 18001)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सूरत के बैठक की झलकियाँ

काकरापार गुजरात स्थल पर आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिती सूरत की बैठक में उपस्थित विभिन्न कार्यालयों के अधिकारीगण

अणुमाला

हिंदी गृह पत्रिका (छःमाही)

अंक – 75 जुलाई से दिसंबर – 2024

"जन-जन की भाषा है हिंदी"

श्री संजय कुमार मालवीय
स्थल निदेशक एवं
अध्यक्ष राभाकास, मुख्य संरक्षक, अणुमाला

श्री अजय कुमार भोले
केंद्र निदेशक
इकाई– 1 व 2, संरक्षक, अणुमाला

श्री यश लाला
केंद्र निदेशक
इकाई– 3 व 4, संरक्षक, अणुमाला

श्री पुतान सिंह तोमर
प्रमुख (मा.सं.)
प्रमुख मार्गदर्शक

श्री एम.एच.शर्मा
प्रभारी अभियंता (परिवहन)
सह मार्गदर्शक

श्री सुरेंद्र कुमार तेलंगे
प्रबंधक (राजभाषा)
संपादक, अणुमाला

श्रीमती जयश्री निक्सन
वरिष्ठ सहा. ग्रेड II

श्री एस. वी. देशिकामणि
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
(संपादन सहयोग)

श्री प्रशांत पाठक
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
(संपादन सहयोग)

श्री उर्विन बी शाह
वरिष्ठ तकनीशियन – जे

गृहपत्रिका निःशुल्क निजी वितरण हेतु है। सभी कार्मिकों एवं उनके परिजनों से रचनाएँ आमंत्रित हैं।
लेखकों के अपने विचार हैं, प्रकाशित सामग्री से संपादक मंडल की सहमति हो यह आवश्यक नहीं।

संपर्क सूत्रः प्रबंधक (राजभाषा)
काकरापार गुजरात स्थल, डाक-अणुमाला, वायाः व्यारा,
जिला – तापी (गुजरात) 394651

अनुक्रमणिका

क्र.संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	अणुमाला	01
2.	अनुक्रमणिका	02
3.	स्थल निदेशक की कलम से	03
5.	मुख्य मार्गदर्शक की कलम से	04
4.	संपादकीय	05
5.	काकरापार परमाणु विद्युत केंद्र 1 एवं 2 का प्रदर्शन सार	06
6.	काकरापार परमाणु विद्युत केंद्र 3 एवं 4 का प्रदर्शन सार	07
7.	लघु प्रमापीय रिएक्टर की परिकल्पना (लेख)	08–10
8.	सुनो बच्चों ना तनिक घबराना (कविता)	10
9.	अनमोल उपहार (कहानी)	11–12
10.	केएपीएस 1 एवं 2 की संरक्षा गतिविधियां	13–14
11.	हाउसकीपिंग स्वच्छता पखवाड़ा (रिपोर्ट)	15–16
12.	निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (रिपोर्ट)	17–19
13.	हमसे है जमाना (कविता)	19
14.	वाराणसी से मुंबई– सपनों की पहली ऊंची उड़ान (संस्मरण)	20
15.	नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र की गतिविधियां (रिपोर्ट)	21–22
16.	राजभाषा गतिविधियां (रिपोर्ट)	23–25
17.	वैज्ञानिक संगोष्ठी की झलकियाँ (रिपोर्ट)	26
18.	कवि सम्मेलन (रिपोर्ट)	27–28
19.	एक नारी की अभिलाषा	29
20.	हमारे सामाजिक सारोकार	30
21.	लम्हा (कविता)	30
21.	राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस 2024 का आयोजन	31–32
22.	महिला क्लब की गतिविधियां	33–34
23.	केटीआरडब्ल्यूआरसी की गतिविधियां (रिपोर्ट)	35–38
24.	बाइक यात्रा (संस्मरण)	39–40
25.	स्वागत एवं विदाई	41–44

स्थल निदेशक की कलम से.....

राजभाषा हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह वह सूत्र है जो देश की विविधता को एकता में पिरोता है। एनपीसीआईएल जैसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगठन में, जहाँ उच्च तकनीकी शब्दावली और अनुसंधान का बोलबाला है, वहाँ हिंदी का समावेश एक चुनौती अवश्य है, परंतु यह हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी और सांस्कृतिक कर्तव्य भी है। हम यह स्वीकार करते हैं कि तकनीकी कार्यप्रणाली में अंग्रेजी का व्यापक प्रयोग होता रहा है, लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि हमारी राजभाषा हिंदी में वह शक्ति है जो किसी भी जटिल विषयवस्तु को जनसामान्य के लिए सरल, सुलभ और प्रभावी बना सकती है। यही कारण है कि एनपीसीआईएल में हिंदी के प्रोत्साहन हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

हमारे संयंत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन की नियमित रूप से समीक्षाएँ की जाती है जैसे की अनुभागों में राजभाषा के संबंध में पाई गई कमियों को सुधार करके भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाना। स्थल में तकनीकी हिंदी लेखन को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, मूल रूप से हिंदी में कार्य करने वाले कार्मिकों को हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के तहत पुरस्कृत भी किया जाता हैं। इतना ही नहीं, राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु कवि सम्मेलन, हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है ताकि कार्मिक हिंदी के प्रति और अधिक जागरूक हो। कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रोत्साहन हेतु प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की जाती है, जिसमें हिंदी लिखने में आ रही कठिनाइयों का निराकरण कर अभ्यास कराया जाता हैं। राजभाषा की प्रगति हेतु न केवल कर्मचारियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जा रहा है, बल्कि उन्हें वह प्रशिक्षण और संसाधन भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं जो हिंदी में दक्षता प्राप्त करने हेतु आवश्यक हैं। राजभाषा का सशक्त प्रयोग केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि यह एक सोच है – सुलभता, सहभागिता और सम्मान की सोच। एनपीसीआईएल में हमारा यह प्रयास है कि हम हिंदी को केवल कार्यालयीन कामकाज तक सीमित न रखें, बल्कि इसे संवाद, नवाचार और प्रशासनिक पारदर्शिता का माध्यम बनाएं। यह एक आह्वान है– अपने ज्ञान, अनुभव और दायित्व के साथ राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाने हेतु मिलकर कार्य करें। आइए, हम एक ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहाँ विज्ञान और संस्कृति, तकनीक और परंपरा, दोनों समान गति से आगे बढ़ें।

`हिंदी बढ़े, तकनीक जुड़े यही हमारी संकल्पना है।

`जय हिन्दी ! जय विज्ञान ! जय भारत, जय एनपीसीआईएल !

संजय कुमार मालवीय
मुख्य संरक्षक– अणुमाला

मुख्य मार्गदर्शक की कलम से.....

जब हम विकसित भारत की परिकल्पना करते हैं, तो यह केवल भौतिक प्रगति का सपना नहीं होता, बल्कि यह एक ऐसे भारत की आकांक्षा होती है जहाँ प्रशासनिक तंत्र पारदर्शी, उत्तरदायी और नागरिकों के लिए सुलभ हो। इस दिशा में सरकारी कार्यालयों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जिसमें विशेषतया मानव संसाधन अनुभाग की चूंकि संयंत्र स्थल पर कार्यरत कार्मिक अपनी आवश्यक प्रशासनिक जरूरतों के लिए अपना कार्यस्थल छोड़कर संबंधित कार्मिक के पास अपने विषयों का निराकरण के लिए आने से उसका काफी समय व्यर्थ होता जिससे उत्पादकता पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। प्रशासनिक कार्यों की उत्पादकता बनाए रखने हेतु इन कार्यों को सुचारु व सशक्त बनाने के लिए कुशल कार्मिकों को होना अत्यावश्यक है जिससे किसी प्रकार की त्रुटि किए बिना प्रशासनिक कार्यों का निपटान किया जाता हो। यह तभी सम्भव है जब हम सब कंपनी की प्रशासनिक नियमावली से रूबरू वाकिफ होंगे और निपटान की प्रक्रिया को समझते हैं।

प्रशासनिक कार्य को यथाशीघ्र निपटान करने में राजभाषा हिंदी प्रमुख भूमिका अदा कर सकती चूंकि यह इतनी सरल एवं सहज भाषा है कि जिसे आम जनता आसानी से समझ सकती है, इतना ही नहीं तो संबंधित कर्मचारी भी अपना कार्यालयीन कार्य सुगमता के साथ पूरा कर सकते है। एनपीसीआईएल जैसी वैज्ञानिक संस्थाएं, जो ऊर्जा सुरक्षा के साथ-साथ तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में कार्यरत हैं, उनके कार्यालय इस परिवर्तन यात्रा के जीवंत केंद्र हैं जहां अधिकांश कार्यालयीन कार्य बड़ी सहजता के साथ राजभाषा हिंदी में निपटान किया जाता है मानव संसाधन प्रमुख होने के नाते मेरा यह मानना है कि कार्यालय की सफलता का मूल आधार वहाँ कार्यरत अधिकारी व कर्मचारी होते हैं। यदि वे प्रशिक्षित, प्रेरित और संवेदनशील हों, तो किसी भी योजना को जमीनी स्तर तक पहुँचाना संभव है। हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने कार्यबल को न केवल तकनीकी रूप से दक्ष बनाएं, बल्कि उनमें सेवा भावना, नैतिकता और नेतृत्व क्षमता भी विकसित करें। मानव संसाधन विभाग की भूमिका अब केवल प्रशासनिक नहीं रह गई है। यह विभाग कार्य संस्कृति का वाहक, आंतरिक प्रेरणा का स्रोत और संस्थागत चरित्र का निर्धारक बन चुका है। इस दिशा में बढ़ते हुए हम यह प्रयास कर रहे हैं कि प्रत्येक कर्मचारी को निरंतर प्रशिक्षण मिले, उसे नवाचार के लिए प्रोत्साहन मिले, और उसकी भूमिका को केवल कार्यकर्ता नहीं, राष्ट्र निर्माता के रूप में देखा जाए।

मेरा यह विश्वास है कि यदि हम अपने सरकारी कार्यालयों को उत्तरदायी, दक्ष और जनोन्मुखी बना सकें, तो भारत निश्चित ही वैश्विक मंच पर एक प्रेरक शक्ति के रूप में स्थापित होगा। यह परिवर्तन तभी संभव है जब हम मानव संसाधन को केवल संसाधन नहीं, बल्कि भविष्य का शिल्पकार मानें।

पुतान सिंह तोमर
प्रमुख (मा.सं.)

संपादकीय.....

मेरा हमेशा से यह मानना रहा कि किसी भी भाषा का विस्तार उसकी लोकप्रियता या उसका दायरा तब तक नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे जरूरत से जोड़ा नहीं जाता है। आवश्यकता अपने आप उसे विस्तार देती है और लोकप्रिय बना देती है। हिंदी को इसी जरूरत अर्थात रोजगार से जोड़ने की आवश्यकता है। हिंदी के तुलना में अंग्रेजी ने अपने को जरूरत से जोड़ रखा है। जिस निष्ठा और गति से रोजगार के क्षेत्र में अंग्रेजी की आवश्यकता महसूस की जा रही है उतनी अहमीयत हिंदी को कार्यालयीन या अनुसंधान कामकाज में नहीं दी जा रही है, जिसके परिणाम स्वरूप हिंदी के प्रचार–प्रसार में बाधाएं निर्माण होती है। 75 वर्ष की लम्बी अवधि बीत जाने के बावजूद अभी तक हमने हिंदी को जरूरत की भाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया है खास तौर पर विज्ञान, तकनीकी प्रशासनिक आदि महत्वपूर्ण विधाओं में हिंदी साहित्य की अनुपलब्धता को दर्शाता है जबकि इन क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों को हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान है। लेकिन अपनी पराकाष्ठा को प्रदर्शित करने के लिये अंग्रेजी में बोलना गर्व समझते हैं।

हम हिंदी में बोलना, संगीत सुनना तो पसंद करते है लेकिन उसे लिपिबद्ध नहीं कर पा रहे है जिसके कारण भाषा के विकास में बाधाएं उत्पन्न हो रही है जब तक नए शब्दों को भाषा में लिपिबद्ध नहीं कर लेते तब–तक उसका विकास इसी तरह चलता रहेगा। यदि हम अभी नहीं जागे तो भविष्य में भारतीय भाषाएं सहित हिंदी का भी पतन होने में देरी नहीं लगेगी। जिस तरह शिक्षित वर्ग बाल्य अवस्था से ही अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने–लिखने का उपदेश देते है लेकिन अपनी संस्कृति के संरक्षण हेतु मातृभाषा की कितनी अहम्मीयत है यह कभी नहीं बताते जिसके कारण नई पीढी को हिंदी लिखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा रहा है और उनके जहन में भाषा के प्रति कुंठा निर्माण होती है और वे उस भाषा से अपने आप को दूर रखने का प्रयास करते है। कुछ अपवादों को छोड़ दे तो हिंदी भाषा एकदम सरल एवं सहज है जिसे आसानी से लिखा जा सकता है इसके बावजूद सरकारी कामकाज में कई लोग अनुवाद का सहारा लेते है जिसे भाषा में विकृति निर्माण होती है चूंकि अनुवाद अपने आप में कठिन कार्य होता है जोकि मूल लेखक द्वारा लिखा गया आलेख अनुवादक की दृष्टिकोण से परे होता है, वर्तमान में कई अंग्रेजी पुस्तकों का हिंदी अनुवाद देखा जा सकता है। यह सच है कि अन्य भाषा में उपलब्ध साहित्य का देश के विकास में उपयोग करना चाहिए लेकिन यह तभी सम्भव है जब हम अपनी मातृभाषा का ज्ञान अच्छी तरह से रखते है ताकि स्त्रोत भाषा को समझा जा सके।

दरअसल हिंदी के प्रचार–प्रसार या मानक स्वरूप देने के लिए हिंदी के विद्वानों, लेखकों, समसामयिक विषयों पर रचना करने वाले साहित्यकारों, अध्यापकों द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से हिंदी भाषा को उन्नत करने की आवश्यकता है ताकि समाज के हर वर्ग अपने–अपने क्षेत्रों में हिंदी में मूल रूप से लेखन करके समाज में हिंदी के प्रति आत्मियता पूर्ण वातावरण निर्माण कर सके। हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में टीवी चैनलों पर प्रसारित होने वाली धारावाहिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है जिससे मनोरंजन के साथ–साथ हिंदी का प्रचार–प्रसार हो रहा है। चूंकि हिंदी एक संवैधानिक भाषा है जिसका प्रचार–प्रसार करना हम सबका नैतिक दायित्व है।

सुरेंद्रकुमार तेलंगे
संपादक – अणुमाला

काकरापार परमाणु विद्युत केंद्र 1 एवं 2 का प्रदर्शन सार (अवधिः जुलाई -2024 से दिसम्बर -2024)

क्रमांक	मानदंड	केएपीएस–1	केएपीएस–2
1.	अधिकतम सकल विद्युत उत्पादन क्षमता (MWe)	220	220
2.	सकल विद्युत उत्पादन (MUs)	874.995	941.680
3.	कैलेंडर वर्ष 2024 में संचित सकल विद्युत उत्पादन (MUs)	1700.520	1896.897
4.	क्षमता गुणक (%)	90.19	96.98
5.	उपलब्धता गुणक (%)	89.45	96.38
6.	सहायक खपत (MUs)	90.087	88.356
7.	पश्चिम ग्रिड में कुल विद्युत आपूर्ति (MUs)	784.7642	850.09258
8.	आऊटेज की संख्या	2	1

इस अवधि के दौरान पुरस्कार एवं उपलब्धियां

केएपीएस-1

केएपीएस इकाई–1 ने 31 दिसम्बर 2024 तक रिएक्टर और टरबाइन के सतत प्रचालन के 156 दिन पूरे किए है एवं 101.29% क्षमता गुणांक के साथ 838 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन किया। केएपीएस 1 एवं 2 पोइजन शट्डाउन के बाद 28 जुलाई 2024 को सिंक्रोनाइज किया गया।

केएपीएस-2

1. केएपीएस–2 ने दिनांक 19/07/2023 तक रिएक्टर और टरबाइन के सतत प्रचालन के 326 दिन पूरे किए एवं 100. 12% के क्षमता गुणक के साथ 1913MU का उत्पादन किया। केएपीएस–2 ने 362 दिन के सतत प्रचालन पर विशेष अवार्ड प्राप्त किया।
2. केएपीएस इकाई–2 ने 31 दिसम्बर 2024 तक रिएक्टर और टरबाइन के सतत प्रचालन के 163 दिन पूरे किए एवं 100. 98% क्षमता गुणक के साथ 869 मिलियन इकाई का उत्पादन किया। केएपीएस–2 पोइजन शट्डाउन के बाद 21 जुलाई 2024 को रात 11:34 बजे सिंक्रोनाइज किया गया।
3. वानो का पीयर रिव्यू –2024 (वानो–फर्प) का अनुवर्तन एवं केएपीएस 1 एवं 2 में दिनांक 25 से 30 नवम्बर 2024 तक वानो का आयोजन किया गया।
4. केएपीएस 1 एवं 2 को "वित्तीय वर्ष 2023–24 के लिए एनपीसीआईएल का उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन विद्युत केंद्र हेतु विशेष पुरस्कार प्रदान किया।"

कल्याण कुमार नंदी
वरिष्ठ तकनीकी अभियंता (योजना)
केएपीएस 1 एवं 2

जो कलम सरीखे टूट गए पर झुके नहीं,
उनके आगे यह दुनिया शीश झुकाती है,
जो कलम किसी कीमत पर बेची नहीं गई,
वह तो मशाल की तरह उठाई जाती है।

शिवदान सिंह चौहान

काकरापार परमाणु विद्युत केंद्र 3 एवं 4 का प्रदर्शन सार (अवधिः जुलाई -2024 से दिसम्बर -2024)

क्रमांक	मानदंड	केएपीएस–3	केएपीएस–4
1.	अधिकतम सकल विद्युत उत्पादन क्षमता (Mwe)	700	700
2.	सकल विद्युत उत्पादन (MUs)	1644.24	2584.38
3.	कैलेंडर वर्ष 2024 में संचित सकल विद्युत उत्पादन (MUs)	3993.513	3444.861
4.	क्षमता गुणक (%)	53.19	83.60
5.	उपलब्धता गुणक (%)	50.76	91.20
6.	सहायक खपत (MUs)	173.778	240.3
7.	पश्चिम ग्रिड में कुल विद्युत आपूर्ति (MUs)	1470.46	2344.075
8.	आऊटेज की संख्या	2	11

इस अवधि के दौरान की उपलब्धियाँ और पुरस्कार

1) वर्ष 2023 के लिए परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद का औद्योगिक संरक्षा सम्मान वर्ष 2024 में प्राप्त हुआ।

2) वर्ष 2023 के लिए परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद का औद्योगिक अग्नि संरक्षा सम्मान वर्ष 2024 में प्राप्त हुआ ।

3) राष्ट्रीय संरक्षा परिषद से "प्रशंसा पत्र 2023 '' प्राप्त हुआ।

केएपीएस-3

1. केएपीएस–3 का प्रथम द्विवार्षिक शटडाउन दिनांक 18.09.2024 से 29.11.2024 तक किया गया था। बीएसडी गतिविधियों के सफलतापूर्वक पूरा होने के बाद दिनांक 29.11.2024 को 23:35 बजे रिएक्टर को क्रांतिक किया गया और दिनांक 30.11.2024 को 14:00 बजे टरबाइन जनरेटर सेट को ग्रिड के साथ जोड़ा गया ।
2. केएपीएस–3 ने जुलाई से दिसंबर – 24 की अवधि में 53.19% की क्षमता गुणक के साथ 1644.24 मिलियन यूनिट का विद्युत उत्पादन किया ।

केएपीएस-4

1. केएपीएस–4 ने जुलाई से दिसंबर– 24 की अवधि में 83.60% की क्षमता गुणक के साथ 2584.60 मिलियन यूनिट का विद्युत उत्पादन किया।

अन्यः

- केएपीएस–3 की बीएसडी के दौरान 14 से 19 अक्टूबर, 2024 को कॉर्पोरेट पीयर रिव्यू किया गया।
- केएपीएस–3 एवं 4 में दि. 05 से 07 नवंबर, 2024 को वानो पीयर रिव्यू विजिट पूर्व किया गया।
- केएपीएस–3 एवं 4 में दिनांक 10 से 20 नवंबर, 2024 को कॉर्पोरेट पीयर रिव्यू किया गया।

संजय कुमार
वरिष्ठ तकनीकी अभियंता (योजना)
इकाई 3 एवं 4

विद्यार्थी की परीक्षा जबतक नहीं होती, वह उसी की तैयारी में लगा रहता है, लेकिन परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने के बाद भावी जीवन–संग्राम की चिंता उसे हतोत्साह कर दिया करती है। उसे अनुभव होता है कि जिन साधनों से अब तक मैंने सफलता प्राप्त की है,वे इस नए, विस्तृत, अगम्य क्षेत्र में अनुपयुक्त हैं।

प्रेमचंद

लघु प्रमापीय रिएक्टर की परिकल्पना

COP28 की पृष्ठभूमि में, जहां परमाणु ऊर्जा को ऊर्जा मिश्रण में एक अनिवार्यता के रूप में घोषित किया गया था, विभिन्न उद्योग ग्रीन हाउस उत्सर्जन नियंत्रण में लाभ अर्जित करने के लिए बिजली/हाइड्रोजन/भाप के माध्यम से परमाणु को अपनी प्रक्रियाओं में शामिल करने की उम्मीद कर रहे हैं। परमाणु ऊर्जा से बिजली पैदा करने और प्रक्रिया ताप के लिए छोटी और सरल इकाइयों में गहरी रुचि है। भारत परमाणु ऊर्जा को स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक मानता है और मानता है कि यह भविष्य के ऊर्जा मिश्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। परमाणु ऊर्जा अपनाने में तेजी लाने की दिशा में, लघु मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर) व्यवहार्य ऊर्जा गुणक हैं और इनमें उद्योगों को डीकार्बोनाइज करने, पुराने जीवाश्म–ईंधन से चलने वाले संयंत्रों को फिर से स्थापित करने और स्मार्ट ग्रिड को निरंतर और विश्वसनीय बिजली प्रदान करने की क्षमता है।

लेकिन भारतीय परमाणु ऊर्जा की पृष्ठभूमि पर, जहां पीएच–डबल्यूआर का वर्चस्व स्थापित है, वहीं पीएचडब्ल्यूआर से जुड़े कुछ मुद्दों के साथ सामान्य तौर पर परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं जो वर्तमान ऊर्जा मिश्रण में परमाणु ऊर्जा की तीव्र वृद्धि में बाधा डालती हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

1. यूनिट प्रचालन के दौरान ट्रिशियम रिसाव और मॉडरेटर के माध्यम से ट्रिशियम का उत्पादन।
2. बड़े बहिस्त्राव क्षेत्र और साइटिंग आवश्यकताएँ।
3. सिस्टम की लगातार बढ़ती जटिलता, मुश्किल इंस्ट्रुमेंटेशन एवं कंट्रोल और कई सुरक्षा प्रणालियों के साथ।
4. विशिष्ट उपकरणों, प्रौद्योगिकी और बड़े निर्माण समय के लिए विक्रेता विकास।

उपरोक्त समस्याएँ और पीएचडब्ल्यूआर. परमाणु रिएक्टरों को मॉड्यूलर बनाने के लिए किए गए सभी आकलन में, पीएचडब्ल्यूआर को ऐसे संशोधनों के लिए सबसे कम उत्तरदायी के रूप में पहचाना गया है। लेकिन 220 मेगावाट पीएचडब्ल्यूआर में हमारी विशेषज्ञता के साथ, संशोधित छोटे रिएक्टर, एमएसआर की एक नई अवधारणा भारतीय परमाणु बिरादरी में लोकप्रियता हासिल कर रही है। इस रिएक्टर अवधारणा के अनुसार, हमारे स्वदेशी रिएक्टर डिज़ाइन को छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर, एसएमआर यानी छोटे, तैनात करने में आसान और सुरक्षित रिएक्टर की आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए संशोधित किया जा सकता है। हालाँकि, इस अवधारणा को कई मोर्चों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा , जिन पर विशेषज्ञ हर स्तर पर विस्तार में चर्चा कर रहे हैं । एमएसआर का अधिक विवेकपूर्ण और व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखते हुए इस पत्र मे भी इस नायाब तरीके पर संशोधन का प्रयास किया गया है।

पृष्ठभूमि: ऐतिहासिक रूप से, सुरक्षा प्रणालियाँ, निगरानी और निरीक्षण, कभी–कभी आधुनिकीकरण के कारण और कुछ अन्य मामलों में परिचालन अनुभव की अनुशंसा पर, मूल डिज़ाइन में जुड़ते रहे हैं। हालाँकि इनमें से प्रत्येक परिवर्धन/संशोधन के साथ सुरक्षा को बढ़ाया गया है, डिज़ाइन और संचालन में जटिलताएं धीरे–धीरे आ रही हैं। इसने डिज़ाइन, निर्माण और प्रचालन में अनपेक्षित जटिलता को दूर करने के लिए डिज़ाइन पर दोबारा विचार करने के लिए पर्याप्त जगह बनाई है। हालाँकि, उद्योग की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मौजूदा डिज़ाइनों में संशोधन की आवश्यकता है, क्योंकि एक नए डिज़ाइन को विकसित होने में महत्वपूर्ण समय लगेगा। मौजूदा डिज़ाइन में शामिल करने के लिए घटते महत्व के क्रम में डिज़ाइन प्राथमिकताओं की पहचान की गई और उनकी गणना इस प्रकार की गई:

- सुरक्षा: अनिश्चित काल तक निष्क्रिय तरीकों से सुरक्षा उद्देश्यों (प्रतिक्रियाशीलता नियंत्रण, क्षय ताप निष्कासन और रेडियोधर्मिता रोकथाम) को पूरा करने की क्षमता।
- 2030–2040 तक तैनाती योग्य पर्याप्त प्रौद्योगिकी परिपक्वता।
- संयंत्र की ऊर्जा घनत्व को अधिकतम करने के लिए कॉम्पैक्ट रिएक्टर लेआउट।
- बिजली रूपांतरण चक्र की उच्च थर्मोडायनामिक दक्षता
- बिजली रूपांतरण चक्र (टरबाइन ई जनरेटर चक्र) की उच्च सघनता।

नए रिएक्टर के महंगे और समय लेने वाले डिज़ाइन से बचने के लिए, सुरक्षा को बढ़ाते हुए सरलता बढ़ाने के लिए मौजूदा डिजाइन में मामूली संशोधन को एक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के रूप में महसूस किया गया है। सरलता लाने का लक्ष्य आकार, तैनाती में आसानी और लागत–प्रभावशीलता के संदर्भ में डिजाइन को अनुकूलित करना है।

1.1.1 कम उपकरण, छोटा आकार तैनाती के समय को कम करने में योगदान देगा।

1.1.2 सिद्ध प्रौद्योगिकियों के उपयोग से तेज डिजाइन प्रक्रिया और आसान नियामक मंजूरी में मदद मिलेगी।

दबावयुक्त भारी पानी रिएक्टरों (पीएचडब्ल्यूआर) के डिजाइन में सरलता बढ़ाने से डिजाइन को सुव्यवस्थित किया जा सकता है, अनावश्यक जटिलता को कम किया जा सकता है और सीधे इंजीनियरिंग समाधानों को शामिल किया जा सकता है। दबावयुक्त भारी पानी रिएक्टरों (पीएचडब्ल्यूआर) के डिजाइन में सरलता बढ़ाने में डिजाइन को सुव्यवस्थित करना, अनावश्यक जटिलता को कम करना और सीधे इंजीनियरिंग समाधानों को शामिल करना है। निम्नलिखित दो दृष्टिकोणों से निर्माण और कमीशनिंग समय और प्रचालन लागत में कमी आ सकती है।

क) प्रचालन और सुरक्षा प्रणालियों का संयोजन

ख) समान प्रक्रिया मापदंडों के साथ सिस्टम का संयोजन

इस प्रकार प्रत्येक उप–प्रणाली के लिए उपरोक्त विचारों पर न्यूनतम डिज़ाइन परिवर्तनों के साथ 220 मेगावाट iPHWR में सुझाव एकत्र करना और उनका आकलन करना हो सकता है। इसका परिणाम उद्योग को बिजली/हाइड्रोजन/भाप की आपूर्ति के लिए त्वरित तैनाती की एक अवधारणा होगी, जिसमें सभी प्रमुख एसएमआर सुविधाओं को समायोजित करके एक बहुमुखी डिजाइन तैयार किया जाएगा जो वास्तव में मॉड्यूलर हो सकता है और किसी भी भारतीय उद्योग के लिए डीकार्बोनाइजेशन का स्रोत बन सकता है।

वर्तमान कार्य ओ एंड एम कर्मियों को इसके बिजली उत्पादन, बहुमुखी प्रतिभा को बढ़ाने और प्रचालन और रखरखाव को सरल बनाकर आधुनिक रिएक्टर डिजाइन में लाए जाने वाले परिवर्तनों पर विचार करने और सुझाव देने के लिए प्रेरित करने का एक प्रयास है।

परिणाम केवल एक संकल्पना हो सकता है, और संकल्पनात्मक डिज़ाइन को बाद में पूरा करना वांछनीय है किसी विशेष अवधारणा को चुनने के लिए आधार प्रदान करने के लिए गहन अध्ययन और उसके बाद प्रदर्शित करें कि विभिन्न विचारों का पूरी तरह से पता लगाया गया है। हमारे 220 मेगावाट पीएचडब्ल्यूआर डिज़ाइन पर लागू निम्नलिखित एसएमआर विशेषताओं पर विचार आमंत्रित किए जा सकते हैं।

ए. एसएमआर विशेषता: कॉम्पैक्ट डिजाइन:

पीएचडब्ल्यूआर के आकार और लेआउट को इसके आकार को कम करने और अन्य उद्योगों के भीतर आसान एकीकरण के लिए इसकी तैनाती को त्वरित बनाने के लिए निम्नलिखित तरीकों से संशोधित किया जा सकता है। इस कार्य में डिज़ाइन सरलीकरण द्वारा अनावश्यक घटकों को कम करने का दृष्टिकोण अपनाया गया है।

कुछ नमूना विचार इस प्रकार हैं:

PHT: विकिरण और ईंधन डिजाइन संबंधी आकलन से बचने के लिए प्राथमिक प्रणालियों में फिलहाल कोई बदलाव नहीं किया जाना चाहिए।

मॉडरेटर प्रणाली:

ट्रिशियम रिलीज को सीमित करने के लिए ट्रिशियम उत्पादन/पृथक्करण का उपयोग।

सामान्य प्रणाली के माध्यम से मॉड एचएक्स को ठंडा करना।

आरवी सहायक:

आसान निर्माण, सरल शीतलन सर्किट, आसानी के लिए ई/एस और सी/वी संयुक्त मॉड्यूलरीकरण। ई/एस में तापमान प्रोफ़ाइल और सिस्टम तापमान बनाए रखा जाएगा वही, लेकिन ठंडा पानी सामान्य होगा और इसे सप्रेशन पूल से प्राप्त किया जाएगा एसएफएसबी के रूप में भी दोगुना।

यह मुख्य घटकों, रोकथाम और ठंडा पानी में एक प्रमुख डिज़ाइन परिवर्तन है सिस्टम तकनीकी तत्परता कोई मुद्दा नहीं हो सकता है, लेकिन योग्यता और औचित्य जांच के लिए खुला है।

सीसीएस:

पीएचटी सेंट टैंक की क्षमता बढ़ाने के बाद सिंगल स्टेज ईसीसीएस लागू किया जा सकता है। पानी को कूलिंग के लिए पैसिव रिजर्व टैंक से उपरोक्त इन्वेंट्री दोगुनी हो सकती है।

PHWR डिज़ाइन को बेहतर बनाने के लिए अतिरिक्त प्रौद्योगिकियाँ।

सुपरहीटिंग न्यूक्लियर स्टीम: जीवाश्म–ईंधन वाले सुपर–हीटर का उपयोग करके उत्पन्न भाप को सुपरहीट करें, और इस प्रकार भाप इनलेट तापमान को पारंपरिक बिजली संयंत्र के स्तर तक बढ़ा दें। सुपरहीटिंग से लाभ तीन गुना हो जाता है

1. परमाणु ऊर्जा स्टेशनों की दक्षता बढ़ाने के लिए।
2. यदि 800 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, तो यह ग्रीनर एच 2 उत्पादन में मदद करेगा।
3. लोड फॉलो क्षमता के साथ सह–उत्पादन इकाई के रूप में आसान सिस्टम एकीकरण जहां ग्रिड द्वारा कम लोड आवश्यकताओं के दौरान अतिरिक्त भाप को एच 2 उत्पादन या अन्य प्रासंगिक अनुप्रयोग में मोड़ा जा सकताहै।

पानी की खपत कम करें: लगभग हर ऊर्जा गहन उद्योग को पानी की आवश्यकता होती है, हम इसका उपयोग करके अपने संयंत्र को ठंडा करने के लिए पानी की आवश्यकता को कम कर सकते हैं।

1) ड्राई कूलिंग टावरों के साथ वर्तमान में उपयोग किए जाने वाले वेट कूलिंग सिस्टम का एक हाइब्रिड मॉडल।
2) कंडेनसर कूलिंग में हीट पंप के उपयोग की एक अभिनव प्रणाली।
3) तृतीयक अमोनिया पानी की आवश्यकताओं को काफी कम कर सकता है।

अलवणीकरण:

मॉडरेटर और फ़ीड पानी की अपशिष्ट गर्मी से अलवणीकरण सुविधा का प्रावधान घरेलू खपत के लिए पीने योग्य पानी उपलब्ध कराने के लिए सीएसआर पहल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अलवणीकरण के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों में से, एमएसएफ, मल्टी स्टेज फ्लैश (एमएसएफ) प्रक्रिया परमाणु अपशिष्ट ताप उपयोग के लिए सबसे किफायती और उपयुक्त है, जिसे प्रक्रिया को खंडों या चरणों में विभाजित किया गया है। खारे पानी को उबलते तापमान पर 90 और 110 C° के बीच गर्म किया जाता है, जिसमें धीरे–धीरे दबाव कम होता जाता है। प्रत्येक चरण में पानी का एक हिस्सा चमकता है (जल्दी से वाष्पीकृत हो जाता है) जबकि शेष निम्नलिखित चरणों के माध्यम से बहता रहता है प्रक्रिया को अपशिष्ट या उप–उत्पाद गर्मी द्वारा संचालित किया जा सकता है, उसी में बिजली, गर्मी और अलवणीकृत पानी का संयुक्त उत्पादन (सह–उत्पादन) होता है। यह संयंत्र लागत प्रभावी और ऊर्जा–कुशल तरीके से बिजली और पानी की मांग को पूरा

करने के लिए एक तकनीकी समाधान है। अपशिष्ट ताप का उपयोग करने के लिए समुद्री जल से ठंडा किए गए टीजी कंडेनसर से कंडेनसर रिटर्न पानी को अलवणीकृत करने का प्रस्ताव है।

आपातकालीन योजना के दायरे को सीमित करने के लिए समुद्र तट के निकट स्थान का प्रस्ताव

उच्च जीवन और डिजाइन दबाव के साथ बेहतर वेंटिलेशन फिल्टर।

स्टेनलेस स्टील रोकथाम: न्यूनतम जमीनी स्तर की रिहाई के साथ सस्ते और तेज़ निर्माण के लिए प्राथमिक स्टील रोकथाम। कंक्रीट से बने पारंपरिक माध्यमिक कन्टेनमेंट के साथ प्राथमिक में स्टील कन्टेनमेंट के उपयोग से, यह दोनों प्रौद्योगिकियों का सबसे अच्छा उपयोग है।

सौर पैनलों और संबंधित बैटरी बैंकों में एडीजी के माध्यम से आवश्यक भार की आपूर्ति का प्रावधान होना चाहिए।

भारत अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने और 2070 तक शुद्ध–शून्य उत्सर्जन हासिल करने के प्रयासों के बीच वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा बिरादरी में योगदान देने का प्रयास कर रहा है। यह स्थापित किया गया है कि छोटे मॉड्यूलर परमाणु रिएक्टरों के अंतर्निहित लाभों के कारण परमाणु ऊर्जा को अपनाने में तेजी लाई जा सकती है। सुरक्षा, लचीलेपन, लागत–प्रभावशीलता और मॉड्यूलरिटी की सरलीकरण के अवसरों को उच्च प्राथमिकता के साथ अपनाया जाना चाहिए और डिजाइन निर्णयों में पिछले परिचालन संयंत्रों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। अश्वपरेटर प्रशिक्षण और मानवीय त्रुटियों को बचाने के लिए सरलीकरण का मूल्यांकन मुख्य रूप से प्लांट ऑपरेटर के दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।

श्रीश शौर्य
ऑपरेटश्र प्रशिक्षण
वैज्ञानिक अधिकारी – एफ
केएपीएस – प्रचालन 1 व 2

सुनो बच्चों ना तनिक घबराना

सुनो बच्चों ना तनिक घबराना
घड़ी हैं परीक्षा की हिम्मत से टकराना।
हो परिणाम कुछ भी तुम खुद पर भरोसा दिखाना।

सुनो बच्चों ना तनिक घबराना ।

घड़ी मजबूत तुम्हें बनाएगी।
हर मुसीबत से लड़ना सिखाएगी
हौंसलों की उड़ान रखना
सफलता जरूर कदम चुमने आएगी।

सुनो बच्चों ना तनिक घबराना ।

मेहनत पर ना प्रश्न उठाना
काम तुम्हारा मेहनत मेहनत करते जाना।
लोगों की दृष्टि सोच पर ना जाना
तरह–तरह का मुख तरह–तरह का नजराना।

सुनो बच्चों ना तनिक घबराना
घड़ी हैं परीक्षा की हिम्मत से टकराना
हो परिणाम कुछ भी तुम खुद पर भरोसा दिखाना।

कंचन यादव
गृहिणी, अणुमाला टाउनशिप

'नमस्ते' और 'प्रणाम' शब्दों का अर्थ–भेद एवं शुद्ध प्रयोग।

'नमस्ते' ('नमः' धन ते) संस्कृत में पूरा वाक्य है, जिस का अर्थ है, आप को नमस्कार है।'

'नमः' और 'नमस्' में 'नम्' धातु है: 'नमस्कार' में भी 'नम्' है 'नमन' विनती' और 'विनती' में भी 'नम्' है; 'नति और 'प्रणति' में भी 'नम्' है, और प्रणाम में 'नम्' है। इस धातु का अर्थ है 'नत' होना 'झुकना'।

उपर्युक्त शब्दों के सम्मिलित प्रयोगार्थ इस प्रकार हैं– अभिवादन (श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला नमस्कार), अपनी लघुता व्यक्त करने के लिए किसी के सामने अपने हाथ जोड़ने की क्रिया, किसी को सम्मान देने के लिये अपना सिर नवाने की क्रिया।

'प्रणति' और 'प्रणाम' में 'प्र' का अर्थ–ऊपर से जुड़ जाने के कारण इन का अर्थ 'विशेष रूप से झुकना' हो जाता है। इसलिए ये शब्द अपने से इतने बड़े को कहे जाते हैं कि जो बदले में इन शब्दों को न दुहराकर 'आशीर्वाद' आदि कहते हैं (जब कि 'नमस्ते' या 'नमस्कार' पाने वाले व्यक्ति प्रायः यही वापस करते हैं।

अनमोल उपहार

आज मोहनलालजी और सागरिका देवी ने रचना को खास तौर पर कहा था कि आज शाम का खाना हमारे साथ लेना। विजय और रचना जल्दी ही आ गए थे। काफी देर तक बाते करने के बाद सब लोग डायनिंग हॉल में जमा हो गए। थोड़ी देर बाद सागर भी आया, पर रोशनी अभी तक ऊपर के कमरे में ही थी, न जाने क्या कर थी! खाना लगा दिया गया था। घर के सभी नौकर सर्व करने के लिए खड़े थे।

रचना सागर को एक आँख नहीं भाती थी, उसे देखते ही सागर के पूरे शरीर में आग लग जाती थी। वहीं रचना डायनिंग हॉल में सब के साथ खाना खाने बैठी थी। सागर आज बहुत गुस्से में था। सागर ने तय कर लिया कि आज वह किसी के गले से खाना नीचे नहीं उतरने देगा।

आज सागर का मन खाने में नहीं था, वह तो अपने दिल की भड़ास निकालना चाहता था। अपने साले विजय को सागर ने अपना पालतू पिट्ठू बना कर रखा था। विजय को आवारा / नाकारा बनाकर ऑफिस के हर काम से बाहर कर के सागर सागरिका इंडस्ट्री का सर्वे सर्वा बनना चाहता था। सागर ने रोशनी से शादी ही इसलिए की थी कि मोहनलाल जी के बाद बिजनेस की कमान रोशनी के हाथों में आनी थी और रोशनी सिर्फ सागर का दिया पानी ही पिती थी। यह सागर की ही मेहनत थी की दोनों भाई – बहन में बात करने का भी रिश्ता नहीं बचा था। वैसे सागर ने भरपूर मेहनत की थी कि मोहनलाल और विजय जिंदा न रहे पर वह नाकाम रहा था। सागर समझता था की उसकी हरकतों से सब लोग अंजान है, पर किसी ने उसकी सारी हरकते देख ली थी, समझ ली थी।

एक तरफ अपनी नाकामी सागर से बरदास्त नहीं हो रही थी तो दूसरी और वह सब कुछ पा लेने के लिए बहुत ही अधरा हो गया था। एसे मे सिर्फ 6 महीने बाहर रहकर आया हुआ विजय अचानक अब शेर बन कर उसी के सामने गुर्रा रहा था। एकाएक विजय ने 'नो एल्कोहल' का नियम लागू कर दिया था। विजय ने तो शराब पीना बंद कर दिया था लेकिन साथ में उसने सागर और मोहनलालजी का भी बंद करवा दिया।

सिर्फ शराब अकेली चीज नहीं थी जिससे सागर गुस्सा था, विजय ने अपने आपको ऑफिस के काम में इस तरह से शमिल कर लिया था कि कल का एक नादान बच्चा हर फाइल को अच्छे से चेक कर रहा था और सागर की सारी गलतियाँ पकड़ रहा था। वैसे तो वह गलतियाँ नहीं थी लेकिन अभी तक यह साबित नहीं हुआ था कि सागर ने चोरी की है इसलिए विजय सागर की गलतियाँ निकाल कर उसे कहता था कि आपने यह गलत किया या आपने वह गलत किया है,कृपया आप इसे सुधारें।

सागर के मन में था कि उसे ही इस कंपनी का फ़ाइनेंस हेड बनाया जाएगा। उसने रोशनी को बार–बार कहा था, और रोशनी ने भी अपने पिता से बात कर ली थी कि सागर ही फ़ाइनेंस हेड बनेगा। लेकिन ऐन वक्त पर सागरिका जी ने ऑफिस आकर यह पोस्ट रचना को दे दी। वह और गिरिधर अंकल दोनों मिलकर रचना को इस कंपनी से बाहर फेंकना चाहते थे वही रचना के सामने अब उन लोगो को पाईपाई के लिए हाथ फैलाने पड़ते थे। रचना ने वैसे ही आतंक फैला रखा था। अब तो वह फ़ाइनेंस हेड बन गई थी। सागर को तो वह अपनी केबिन में आने ही नहीं देती थी। कभी कभी काम में हुई गलतियों की वजह से रचना रोशनी को भी बाहर का दरवाजा दिखा देती थी तो फिर सागर की क्या औकात?

ऑफिस में सागर का मान–सम्मान लगभग खत्म हो गया था, इधर विजय ने घर में भी बहुत सारी पाबंदिया लगा दी थी। सागर को लग रहा था कि अब उसे यहाँ से कुछ भी नहीं मिलेगा इसलिए वह चिल्ला रहा था इस प्रॉपर्टी पर रोशनी का भी हक है और मैं उसका पति हूँ तो मेरा भी हक है। हमारे हक को मैं ऐसे मारने नहीं दूँगा।

सागर आज बहुत ही घटिया बद्तमीजी किए जा रहा था और मोहनलालजी चुपचाप सुन रहे थे। सागरिका देवी ने मोहनलालजी को बोल दिया था कि अब आप मेरे बेटे को कुछ मत कहना, वह सही रास्ते पर चल रहा है। मोहनलालजी को भी दिख रहा था कि विजय अब सही मायने में उनका बेटा बन रहा था। सागर और रोशनी के कई आधे अधूरे काम विजय ने सिर्फ दो–तीन महीने में ही पूरे कर दिये थे। जो काम घाटे में हो रहे थे वह सब विजय ने आकर मुनाफ़े में बदल दिये थे। इन सबके चलते मोहनलालजी विजय की किसी भी बात पर एतराज नहीं जताते थे।

इधर सागर को अपनी हुकूमत लुटती हुई दिख रही थी, उसके सास – ससुर अपने बेटे को कुछ भी कहने को तैयार नहीं थे, यह सब उसके गुस्से के ज्वालामुखी को और भड़काते थे। उसने डायनिंग टेबल पर रखे हुए टेबल कवर को ज़ोर से झटक दिया। टेबल पर रखे हुए, सिरामिक के सारे पीस नीचे गिरकर टूट गए।

विजय तो सागर पर पहले से ही खफा था, और आज की सागर की हरकत से वह सागर से झगड़ा करने लगा। मोहनलालजी और सागरिका देवी इन दोनों को समझाने में लगे थे तो ऊपर के कमरे में रोशनी अपने आपको सजाने में लगी थी। जब रोशनी पूरी तरह से सजधज के नीचे आई तो मानो कोई नई नवेली दुल्हन की तरह सजी हुई लग रही थी।

रोशनी को इस तरह सजी देखकर सागर के सिवा सब हैरान हो गए एक तरफ घर में सागर इतना हँगामा कर रहा है तो रोशनी मानो खुद की ही शादी हो ऐसे तैयार हई थी। मोहनलालजी ने उससे बात करना चाहा पर रोशनी उन्हें नज़र अंदाज़ करती हुई अपने पति सागर के पास जाकर खड़ी रही।

रोशनी को सागर की सब बद्तमीजी पता थी पर वह उसे नजर अंदाज कर रही थी। सागर ने रोशनी को अपने पास देखा तो उसे और हिम्मत आ गई। सागर को पता था कि रोशनी

ही उसका हुकम का इक्का है, रोशनी एक बार उसकी बातों में आ जाएँ तो वह पूरी जंग जीत जाएगा। उसने न रोशनी के रूप को देखा न उसके इतना सजने का कारण पूछा, वह तो बस सीधा फरियाद करने लगा। वह रोशनी को कहने लगा कि अब इस घर में हमारी कोई कीमत नहीं रही है। ऑफिस में हमारा मान–सम्मान नहीं रहा, फ़ाइनेंस हेड की पोस्ट उस रचना को दे दी गई। विजय हमें इस घर में अपने तरीके से जीने से रोक रहा है। और भी दुनिया भर की शिकायतें सागर ने रोशनी को कर दी।

रोशनी भी कुछ देर तक उसे सुनती रही फिर बहुत ही प्यार से, अपने शब्दों को शहद में डुबाकर बोली, डार्लिंग यह सब तो होता रहेगा, तुम्हें क्या चाहिए? जो चाहिए वह मैं पापा से कह के दिला दूंगी, मेरे पापा मुझे मना नहीं करेंगे। ऑफिस में फ़ाइनेंस हेड बनना है? हो जाएगा, उसके ऊपर की पोस्ट आपको चाहिए तो वह भी आपको मिल जाएगी। इस वक्त आप यह सब बाते छोड़िए और मेरी मदद कीजिए। मेरा छोटा भाई सुधर रहा है, वह अच्छा काम कर रहा है इसलिए मुझे मेरे भाई को उपहार देना है लेकिन मैं तय नहीं कर पार ही हूँ कि मैं उसे क्या दूँ, तो आप मेरी मदद कीजिए।

सागर वैसे भी उखड़ा हुआ था ऊपर से विजय को उपहार देने की बात सुनकर और भी बरसने लगा अरे मैं यहाँ इतनी फरियाद कर रहा हूँ और तू है कि अपने भाई को उपहार देना चाहती है?

रोशनी ने कहा हाँ, मेरा भाई मेरे पापा का सहारा बनने के लिए खड़ा हैं तो बड़ी बहन होने के नाते मुझे लगता है कि मुझे उसे कोई उपहार देना ही चाहिए। ऐसा नायाब उपहार जो किसी ने किसी को कभी भी ना दिया हो। ऐसी कौन सी चीज दूँ जो सबसे महंगी हो, नायाब हो, जो आज तक किसी भी बहन ने अपने भाई को न दी हो।

सागर उखड़े हुए स्वर में बोला, सब कुछ तो दे दिया है तुम्हारे पापा ने उसे, सारे पावर उसको दे रखे हैं, अब हमारे पास है ही क्या जो हम उसे कोई उपहार दे सके। अब तो सिर्फ मेरी जान बची है मेरे पास, यही दे दे तेरे भाई को उपहार में, कहते हुए सागर नजदीक की कुर्सी पर बैठ गया।

इस पर रोशनी हल्के से मुस्कुराई और सागर के एकदम करीब जाकर उसके गालों को एक प्यार भरी चुम्मी दे दी, फिर बोली जैसी आपकी मर्जी मेरे पतिदेव। आपका सुझाव मुझे बहुत पसंद आया कहते हुए रोशनी ने अपने पर्स में हाथ डाला और तुरंत ही रिवाल्वर निकाल कर सागर के सर पर तान दी।

सब लोग हक्का बक्का हो गए, अरे ये क्या हो रहा है?

सागर के सर पर रिवाल्वर रखकर ट्रिगर दबाने जा रही रोशनी रुक गई, बोली नहीं सागर, सर पर गोली लगने से तो तुम झट से मर जाओगे, उसने अपनी रिवाल्वर सागर के सर से हटाकर उस के सीने के पास रखी और रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया।

गोली की आवाज पूरे हॉल में गूंज उठी। एक चीख के साथ कुर्सी पर बैठा सागर नीचे गिर पड़ा। नीचे पड़ा सागर दर्द से तड़प रहा था, रोशनी उसके पास जाकर बैठी और फिर से सागर की ओर रिवाल्वर तानी, फिर रुककर बोली, नहीं सागर तुझे दूसरी गोली नहीं मारूंगी, इस से तो तू तुरंत मर जाएगा, जो मैं नहीं चाहती, तू ऐसे ही तड़प तड़प के मर। मैं तुझसे जो बात करना चाहती हूँ वह तू सुन उसके बाद ही मरना, उसके पहले नहीं।

पापा ने हमारी शादी करवा दी क्योंकि तू मुझसे और मैं तुझसे प्यार करती थी। इसमें मेरे पापा की क्या गलती है? बता मुझे। तुझे इस घर में रहने दिया इसमें मेरे पापा की क्या गलती है? बता मुझे। प्यार हम दोनों ने किया, पापा ने शादी करवाई इसमें मेरे भाई की क्या गलती है? बता मुझे।

मेरे भाई की दी हुई इज्जत तुझे नहीं चाहिए, मेरे पापा का दिया हुआ मान–सम्मान तुझे नहीं चाहिए, आज में इतनी सजी हूँ, एक आखरी मौका दिया था तुझे, शायद मुझे देखकर तू सब कुछ भूल कर मुझ से प्यार करने लगे, सब कहते हैं कि मैं खूबसूरत हूँ, इतनी खूबसूरत बीवी और उसका का प्यार भी नहीं चाहिए। बस तुझे तो मेरे पापा का पैसा चाहिए, मेरे पापा की दौलत चाहिए। अरे, पागल, मुझे बता देता, मैं यह सब कुछ तेरे नाम कर देती। कोई बात नहीं देख अभी मैं मेरे पापा को कहती हूँ।

रोशनी ने मोहनलालजी की ओर देखा और बोली पापा मेरे पति को आपकी कुर्सी चाहिए, आप देंगे न?

मोहनलालजी ने अपनी आँखो में आसूं के साथ हाँ मे अपना सिर हिलाया।

देख सागर, मेरे पिता तुझे अभी अपनी कुर्सी देने को तैयार है। चल आकर उस कुर्सी पर बैठ। एक बार तू मांग के देखता मुझ से यह सब तुझे ऐसे ही मिल जाता लेकिन यह सब पाने के लिए तूने उन पर हमला करवाया, उनकी जान लेनी चाही उनके साथ–साथ मेरे भाई की भी जान लेना चाही। उसी की सजा है कि मैंने तेरे सीने में गोली मारी है। तुझे भी तो पता चले कि धोखा होने पर सीने में कितना दर्द होता है। मुझे इससे भी ज्यादा दर्द हो रहा है।

मरते–मरते सुनकर जा मेरे पिता की ढाल बनकर मेरा भाई खड़ा है तो मेरे भाई की ढाल बनकर मैं खड़ी हूँ। दुनिया की कोई भी मुसीबत आए, मैं अपने भाई को हमेशा बचाउंगी। मेरा भाई तो तुझे कब का मार देता, पर तू मेरा पति है इसलिए वह तुझ पर हाथ नहीं उठा पा रहा था, इसी वजह से तू अब तक जिंदा था। लेकिन अब तू दोबारा ऐसी कोई भी गंदी हरकत नहीं कर पाएगा जिस से मेरे पिता और भाई की जान को खतरा हो। तू सुन रहा है ना मेरी बात, लेकिन इतनी बात होते–होते तो सागर के प्राण निकल चुके थे और रोशनी उससे कह रही थी, सुन, मेरी बात सुन, मेरी बात सुन तू पर सागर कोई जवाब नहीं दे रहा था।

विजय रोशनी के पास गया और उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला दीदी वह मर चुका है।

शैलेश के परमार
वैयक्तिक निजी सचिव
केंद्र निदेशक इकाई 3 एवं 4

केएपीएस 1 एवं 2 की संरक्षा गतिविधियाँ

कर्मचारियों की संरक्षा, आपातकालीन तैयारी और समग्र कल्याण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विगत छह महीनों में संरक्षा अनुभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रम किए गए। इन गतिविधियों का उद्देश्य कार्यस्थल पर संरक्षा जागरूकता बढ़ाना, संरक्षा संस्कृति को सुदृढ़ करना, कर्मचारियों की तत्परता को बढ़ाना और संरक्षा उपायों का अनुपालन सुनिश्चित करना था। इन प्रयासों से न केवल कार्यस्थल पर संरक्षा को प्राथमिकता मिली, बल्कि कर्मचारी मानसिकता में भी सकारात्मक बदलाव आया।

1. औद्योगिक संरक्षा प्रशिक्षण

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कर्मचारियों की संरक्षा प्रोटोकॉल, जोखिम प्रबंधन और संरक्षा उपायों के प्रति जागरूकता और क्षमता बढ़ाना। इसके तहत विभिन्न गतिविधियां की गईं जिसमें विभिन्न विभागों के कर्मचारियों के लिए नियमित औद्योगिक संरक्षा प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण सत्रों में जोखिम पहचान, सुरक्षित कार्य पद्धतियाँ, मशीनरी संरक्षा, कार्यस्थल पर संभावित खतरों का विश्लेषण, और कार्यस्थल दुर्घटनाओं से बचने के उपायों पर जोर दिया गया। सैद्धांतिक शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किए गए, जहां कर्मचारियों को संरक्षा उपकरणों का सही उपयोग और आपातकालीन परिस्थितियों में सही प्रतिक्रिया की जानकारी दी गई। विभागों के प्रमुख और संरक्षा अधिकारी द्वारा मासिक संरक्षा बैठक और प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया गया। जिसके परिणामस्वरूप कुल 250 से अधिक कर्मचारियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया और पोस्ट–प्रशिक्षण परीक्षण में 100%सफलता दर हासिल की। कर्मचारियों ने संरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करते हुए कार्य करना शुरू किया।

2. व्यक्तिगत संरक्षा उपकरण (PPE) पर संरक्षा सेमिनार

इस प्रकार के सेमीनारों का उद्देश्य कर्मचारियों को PPE के महत्व, उपयोग और देखभाल के बारे में जानकारी देना ताकि कार्यस्थल पर संरक्षा सुनिश्चित हो सके। इसके अंतर्गत की गई गतिविधियों में एक विस्तृत सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें कर्मचारियों को PPE के विभिन्न प्रकार जैसे हेलमेट, दस्ताने, संरक्षा गॉगल्स, श्वसन यंत्र, और संरक्षा जूते के बारे में बताया गया। PPE के सही चयन, फिटिंग, उपयोग और रखरखाव पर व्यावहारिक सत्र आयोजित किए गए। कर्मचारियों को यह बताया गया कि किस प्रकार से प्रत्येक उपकरण उनकी संरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। PPE की नियमित जांच, सफाई और प्रतिस्थापन के बारे में भी सिखाया गया ताकि उपकरण हमेशा प्रभावी और सुरक्षित रहे।

इसके परिणामतः कार्यस्थल पर PPE का उपयोग बढ़ा, और कर्मचारी अधिक जागरूक हुए कि किस प्रकार PPE उनके कार्य के दौरान संरक्षा में मदद करता है जिसके फलस्वरूप दुर्घटनाओं में कमी आई, और कार्यस्थल पर संरक्षा स्तर में वृद्धि हुई।

3. व्यक्तिगत संरक्षा उपकरण का प्रदर्शन

इसका उद्देश्य कर्मचारियों के लिए PPE की उपलब्धता और दृश्यता सुनिश्चित करना ताकि वे कार्यस्थल पर संरक्षा नियमों का पालन कर सकें। इसके तहत PPE को कार्यस्थल पर प्रदर्शन के लिए रखा गया। प्रत्येक PPE प्रदर्शन के पास स्पष्ट संकेतक और निर्देशों के साथ कर्मचारियों को यह बताया गया कि किसी भी कार्य के लिए कौन सा PPE आवश्यक है। हर महीने PPE की स्थिति का निरीक्षण किया गया और यह सुनिश्चित किया गया कि सभी उपकरण सही हालत में हों, और यदि कोई भी उपकरण क्षतिग्रस्त था तो उसे तुरंत बदल दिया गया। परिणामस्वरूप कर्मचारी PPE के उपयोग में अधिक सक्रिय हुए और उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित किया गया कि वे हमेशा सही PPE का चयन करें। कार्यस्थल पर संरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी और PPE का उपयोग सामान्य प्रथा बन गया।

4. अग्नि आपातकालीन अभ्यास

इस कार्यक्रम को आयोजित करने का उद्देश्य यह था कि कर्मचारियों को आग लगने की स्थिति में सुरक्षित और प्रभावी तरीके से निकासी की प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना। इसके लिए कर्मचारियों को आग की आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए एक व्यापक अभ्यास आयोजित किया गया, जिसमें सभी कर्मचारियों को शामिल किया गया। अभ्यास में निकासी प्रक्रिया, अग्निशामक यंत्रों का उपयोग और आग से संबंधित अन्य आपातकालीन उपायों पर प्रशिक्षित किया गया। कर्मचारियों को इस दौरान विभिन्न अग्निशामक यंत्रों का सही उपयोग और स्थिति के अनुसार सही प्रतिक्रिया देने की जानकारी दी गई। इसके परिणाम ये हुए कि अभ्यास में विभिन्न अनुभागो के कर्मचारियों ने भाग लिया। आग से निपटने के लिए कर्मचारियों की तत्परता और समन्वय में सुधार हुआ, और हर किसी को अपनी भूमिका का स्पष्ट ज्ञान हुआ।

5. क्लोरीन लीक हैंडलिंग अभ्यास

इस अभ्यास का उद्देश्य क्लोरीन गैस लीक की स्थिति में कर्मचारियों को सही तरीके से प्रतिक्रिया देने और आवश्यक संरक्षा उपायों को लागू करने के लिए प्रशिक्षित करना था। इन गतिविधियों में क्लोरीन लीक के संभावित खतरों को पहचानने, उसे नियंत्रित करने और कर्मचारी संरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष अभ्यास आयोजित किया गया। इन अभ्यासों में कर्मचारियों को लीक की पहचान, तुरंत प्रतिक्रिया और क्लोरीन गैस के संपर्क से बचाव के उपायों के बारे में बताया गया। कर्मचारियों को यह भी सिखाया गया कि जब क्लोरीन लीक हो तो प्राथमिक चिकित्सा और चिकित्सा सहायता कैसे प्रदान की जाती है। इस अभ्यास प्रशिक्षण के फलस्वरूप कर्मचारियों की प्रतिक्रिया समय में सुधार हुआ, और अब वे लीक की स्थिति में अधिक आत्मविश्वास से कार्य कर रहे हैं तथा संरक्षा उपायों के प्रभावी

पालन से घटना की स्थिति में कर्मचारियों का स्वास्थ्य और संरक्षा सुनिश्चित हो सकी।

6. संरक्षा संस्कृति सर्वेक्षण

इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य संगठन में संरक्षा संस्कृति का आकलन करना और सुधार के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करना था। इस दौरान एक व्यापक संरक्षा सर्वेक्षण आयोजित किया गया, जिसमें कर्मचारियों से संरक्षा प्रथाओं, जोखिमों की पहचान, और कार्यस्थल पर संरक्षा उपायों के बारे में फीडबैक लिया गया। कर्मचारियों को अपने अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, और यह सुनिश्चित किया गया कि वे संरक्षा संस्कृति के विकास में योगदान करें। इस सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकला कि कुछ क्षेत्रों में संरक्षा प्रथाओं को और मजबूत किया जा सकता है, जैसे कि संचार के तरीके और प्रशिक्षण में सुधार। सर्वेक्षण के परिणामों के आधार पर, सुधार के लिए कार्ययोजना तैयार की गई, जो कर्मचारियों की संरक्षा जागरूकता और संरक्षा नेतृत्व में वृद्धि करने में सहायक होगी।

7. हाउसकीपिंग प्रतियोगिता और सर्वेक्षण

स्वच्छता एवं रख–रखाव किसी भी कार्यस्थल का एक महत्वपूर्ण अंग होता है इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कार्यस्थल पर साफ–सफाई और संगठन को बढ़ावा देना, ताकि खतरों को कम किया जा सके और काम करने का वातावरण सुरक्षित बना रहे। इसकी सजगता को बनाए रखने के लिए विभागों के बीच एक हाउसकीपिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कर्मचारियों को साफ–सफाई और व्यवस्थित कार्य क्षेत्र बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। कर्मचारियों ने अव्यवस्था, गंदगी और अन्य खतरनाक स्थितियों को हटाने के लिए प्रयास किए गए। इस प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप यह देखने में आया कि कार्यस्थल पर सफाई और संगठन में उल्लेखनीय सुधार हुआ। विभागों ने अव्यवस्था, गिरने या फिसलने की घटनाओं में कमी की रिपोर्ट की। कर्मचारियों के बीच सफाई और संरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी, जिससे एक सुरक्षित कार्य वातावरण का निर्माण हुआ।

8. ऊँचाई पास शारीरिक परीक्षण

संरक्षा अनुभाग के द्वारा किए गए इस परीक्षण का उद्देश्य कर्मचारियों की शारीरिक फिटनेस का आकलन करना, जो ऊँचाई पर काम करते हैं, ताकि उनकी संरक्षा सुनिश्चित हो सके। इन गतिविधियों में ऊँचाई पर कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए अनिवार्य शारीरिक परीक्षण आयोजित किया गया, जिसमें संतुलन, शारीरिक ताकत और लचीलेपन का आकलन किया गया। कर्मचारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए परीक्षण किया गया कि वे ऊँचाई पर कार्य करने के दौरान सुरक्षित और सक्षम हैं। इन परीक्षणों में जो कर्मचारी परीक्षण में पास हुए, उन्हें 'ऊँचाई पास' प्रमाणपत्र दिया गया। परिणामतः ऊँचाई पर काम करने वाले कर्मचारियों की शारीरिक फिटनेस सुनिश्चित की गई, जिससे जोखिमों को कम किया गया और दुर्घटनाओं की संख्या में कमी आई।

9. संरक्षा प्रतिज्ञा गतिविधि

सभी कर्मचारियों से संरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का संकल्प दिलाना और कार्यस्थल पर संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से स्टेशन प्रबंधन ने कर्मचारियों से संरक्षा प्रतिज्ञा लेने के लिए एक अभियान चलाया, जिसमें कर्मचारियों ने संरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करने, जोखिमों से बचने और अपनी संरक्षा की जिम्मेदारी लेने का संकल्प लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि कर्मचारियों के बीच संरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी और उन्होंने कार्यस्थल पर संरक्षा को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप में लिया। इस दौरान दिलाई गई संरक्षा प्रतिज्ञा द्वारा कर्मचारियों को अपनी संरक्षा प्राथमिकता के रूप में सोचने के लिए प्रेरित किया।

पिछले छह महीनों में संरक्षा अनुभाग की गतिविधियों का यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इन कार्यक्रमों को आयोजित करने से कार्यस्थल पर संरक्षा मानकों में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। संरक्षा प्रशिक्षण, अभ्यास, और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों की तत्परता और संरक्षा संस्कृति में वृद्धि हुई है। संरक्षा के प्रति कर्मचारियों की प्रतिबद्धता ने कार्यस्थल पर सुरक्षित वातावरण को बढ़ावा दिया है। भविष्य में, इन प्रयासों को निरंतर बनाए रखने और सुधारने के लिए कार्य किए जाएंगे ताकि कार्यस्थल पर संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा सके।

प्रद्युम बाहेती
संरक्षा अधिकारी/ई
केएपीएस 1 एवं 2

अहा! ग्राम्य जीवन भी क्या है,
क्यों न इसे सबका मन चाहे।
थोड़े में निर्वाह यहाँ है,
ऐसी सुविधा और कहाँ है?
यहा शहर की बात नहीं है,
अपनी–अपनी घात नहीं है,
आडंबर का नाम है,
अनाचार का काम नहीं है।।

मैथिलीशरण गुप्त

हाउसकीपिंग स्वच्छता पखवाड़ा

स्टेशन हाउसकीपिंग का कार्य केएपीएस 1 एवं 2 के सभी कर्मचारियों द्वारा दैनिक और नियमित रूप से किया जाता है, और इसकी देखरेख स्टेशन प्रबंधन द्वारा विभिन्न प्रणालियों और कार्यक्रमों जैसे कि जॉब ऑब्जर्वेशन, एलएलई, दैनिक फील्ड विजिट, मैनेजर फील्ड विजिट, प्रबंधन साप्ताहिक फील्ड विजिट और मासिक हाउस कीपिंग कमेटी विजिट के माध्यम से की जाती है।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार और एनपीसीआईएल, मुख्यालय के निर्देशों के अनुसार, हर साल 02 अक्टूबर को श्री महात्मा गांधी और डॉ. लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिन के उपलक्ष्य में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जाता है।

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन, केएपीएस 1 एवं 2 के स्टेशन निदेशक श्री अजय के भोले और मुख्य अधीक्षक श्री राकेश कुमार खरे के मार्गदर्शन में किया गया।

हाउसकीपिंग स्वच्छता पखवाड़ा 23.09.2024 से 02.10.2024 की अवधि के दौरान, स्टेशन हाउसकीपिंग समिति सदस्यों एवं अन्य स्वैच्छिक सदस्यों ने संयंत्र में निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रचालन द्वीप, सीएमएम फीडर शॉप और संबंधित कार्यो में हाउस कीपिंग की।

1. आरबी # 1 और आरएबी # 1
2. आरबी # 2 और आरएबी # 2
3. टीबी # 1
4. टीबी # 2
5. सर्विस बिल्डिंग
6. सभी सेक्शनल वर्कशॉप और लैब
7. सीएमएम (केएपीएस 1 एवं 2) फीडर शॉप स्टोर

01.10.2024 को, सभी वरिष्ठ प्रबंधन, समूह प्रमुखों, अनुभाग प्रमुखों, कर्मचारियों के साथ सी एंड एम एम वेयर हाउस के फीडर फैब्रिकेशन शॉप में हाउसकीपिंग ड्राइव (स्वच्छता अभियान) पर विशेष अभियान चलाया गया। शुरुआत में, अनुरक्षण अधीक्षक ने पहले भाग में मौजूद सभी अधिकारियों को ब्रीफिंग दी। फीडर शॉप के सभी क्षेत्रों की सफाई टीम द्वारा की गई। केंद्र निदेशक, केएपीएस # 1 एवं 2, मुख्य अधीक्षक, केएपीएस # 1 एवं 2, एडी (ईएंडयूएस) ने सभी कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपने–अपने कार्यस्थलों पर हर दिन प्रयास जारी रखें, ताकि पूरे साल स्टेशन की समग्र सफाई व्यवस्था बनी रहे। सफाई अभियान से पहले और बाद की सफाई की तस्वीरों के द्वारा देखी जा सकती है। श्री सत्यप्रकाश, तकनीकी अधिकारी/जी द्वारा सभी शामिल कर्मचारियों व अधिकारियों को स्वच्छता पखवाड़े के कार्य की जानकारी दी गयी व धन्यवाद दिया।

स्टेशन हाउस कीपिंग कमिटी द्वारा 23.09.2024 से 02.10.2024 तक हाउस कीपिंग पर विशेष अभियान चलाए जाने की तस्वीरें

सफाई के पहले

सफाई के बाद

सफाई के पहले

सफाई के बाद

स्टेशन हाउस कीपिंग कमिटी द्वारा हाउस कीपिंग ड्राईव (स्वच्छता अभियान) पर पुराने सीएमएम वेयरहाउस, केएपीएस 1 एवं 2 के फैब्रिकेशन शॉप में विशेष अभियान चलाए जाने की तस्वीरें

श्री केदार एम भावे, एमएस और स्टेशन हाउस कीपिंग कमेटी के अध्यक्ष ने सभी वरिष्ठ प्रबंधन, समूह प्रमुखों, अनुभाग प्रमुखों, कर्मचारियों और ठेका श्रमिकों का स्वागत किया

विशेष स्वच्छता अभियान पर फीडर शॉप पुराने सीएंडएमएम वेयर हाउस की सफाई के दौरान वरिष्ठ प्रबंधन, समूह प्रमुख, अनुभाग प्रमुख, कर्मचारी और ठेका श्रमिकों

विशेष स्वच्छता अभियान पर फीडर शॉप पुराने सीएंडएमएम वेयर हाउस की सफाई के दौरान वरिष्ठ प्रबंधन अधिकारियों के साथ श्री ए. के. भोले, केंद्र निदेशक, केएपीएस #1 एवं 2

श्री ए. के. भोले, केंद्र निदेशक, केएपीएस 1 एवं 2, श्री आर० के० खरे, मुख्य अधीक्षक, केएपीएस 1 एवं 2, श्री पी. के. घोष, सहायक सह निदेशक (ईएंडयूएस) के साथ वरिष्ठ प्रबंधन अधिकारियों ने विशेष स्वच्छता अभियान के दौरान कर्मचारियों को जानकारी दी

ए.के. मोहन्ती,
अग्नि–संरक्षण अधिकारी

थोरो किए बडेन की,
बड़ी बड़ाई होए।
ज्यों रहीम हनुमंत को,
गिरधर कहत न कोय।।

रहीम

बड़े व्यक्ति यदि अपनी क्षमता से थोड़ा–सा भी कार्य कर देते हैं तो उनकी अत्यधिक प्रशंसा होती है। जैसे– श्रीकृष्ण ने कुछ देर के लिए गोवर्धन पर्वत को उठा लिया तो उनकी काफी प्रसिद्धि हुई और इन्हें 'गिरिधर' कहा जाने लगा। इसके विपरीत,अपनी क्षमता से भी अधिक सामर्थ्य लगाकर हनुमान संजीवनी वाले पर्वत को कई योजनों तक उठाकर ले गए। फिर भी श्रीकृष्ण को ही 'गिरिधर' कहा जाता है, हनुमान को नहीं।

निगम सामाजिक उत्तरदायित्व

निगम सामाजिक दायित्व के तहत काकरापार गुजरात स्थल के आसपास गांवों में आम जन की सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य सुधार हेतु निरंतर रूप से कार्य किए जा रहे हैं तदनुसार अक्टूबर से दिसंबर 2024 के दौरान निम्न प्रकार के कार्य किए गए।

सीएसआर परियोजना संख्या रू KPSS/SKD/ 2024–25/1 के तहत अनुमानित लागत रू.93,02,176/– के साथ "प्लास्टिक टेक्नॉलॉजी में आवासीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम (बैच– VI एवं VII)" संचालित करने के लिए मुख्य प्रबन्धक (टी), सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ पेट्रोकेमिकल्स इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (CIPET), नवसारी के साथ दिनांक 30.10.2024 को दो समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

यह CIPET तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। मशीन ऑपरेटर–प्लास्टिक प्रसंस्करण का पाठ्यक्रम जो सामान्य रूप से जेनेरिक है, जो आस–पास के गांवों के उम्मीदवारों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण में मदद कर सकता है और प्लास्टिक उद्योगों की मानव शक्ति की आवश्यकता को पूरा करके विभिन्न स्तर के उद्योगों आदि में प्लेसमेंट के अवसर प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम योग्यता 8 वीं कक्षा है और न्यूनतम आयुसीमा 18 वर्ष है तथा पाठ्यक्रमों की अवधि 6 महीने है।

काकरापार गुजरात साइट के आसपास के भूमि प्रभावित गांवों और अन्य गांवों के (80 उम्मीदवारों तक सीमित) युवा/उम्मीदवार इस 6 महीने के आवासीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत लाभान्वित होंगे।

यह परियोजना सतत विकास लक्ष्य/राष्ट्रीय लक्ष्य संख्या 4 और 8,

अर्थात गुणवत्तायुक्त शिक्षा, निर्णायक कार्य और आर्थिक विकास के अंतर्गत आ सकती है।

केएपीएस अपने आस–पास के विस्तार के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा कटिबद्ध है। इसी कड़ी में, केएपीएस सूरत जिले के मांडवी तालुका के महिला स्व सहायता समूहों के लगभग 6000 सदस्यों के लाभार्थ कौशल तालीम कार्यक्रमों का आयोजन करने जा रहा है। एनपीसीआईएल–काकरापार गुजरात साइट के आसपास के क्षेत्र के महिला स्वयं सहायता समूहों के लाभ के लिए एनपीसीआईएल–काकरापार गुजरात साइट द्वारा जिला ग्रामीण विकास एजेंसी, सूरत से (1) पहनावा, आभूषण (2) साबुन, पावडर एवं फिनाइल (3) दर्द निरोधक उत्पाद (4) पापड़ एवं आचार सहित तरह–तरह के बारह प्रकार की उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के लिए प्राप्त प्रस्ताव का स्वीकार किया है। इस परियोजना के क्रियान्वयन हेतु जिला ग्रामीण विकास एजेंसी, सूरत के साथ दिनांक 30/10/2024 को सीएसआर परियोजना: KPSS/SKD/2024–25/1 के तहत एक समझौता ज्ञापन निष्पादित किया गया है।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम से जिला ग्रामीण विकास एजेंसी अंतर्गत समाविष्ट स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी आसपास के गांवों की लगभग 6000 आदिवासी महिलाओं को लाभ होगा। प्रशिक्षण के बाद जिला ग्रामीण विकास एजेंसी सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न मेलों में स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाए गए उत्पादों की बिक्री के लिए सहायता प्रदान करेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके परिवार के जीवन स्तर में सुधार करने में सहायक होंगे और कई वंचित महिलाएं उन्हें सम्मानजनक जीवन बनाए रखने के लिए आत्मनिर्भर बनाएगा।

यह परियोजना सतत विकास लक्ष्य/राष्ट्रीय लक्ष्य संख्या 4 और 8 जो कि क्रमशः गुणवत्ता शिक्षा एवं उचित कार्य आर्थिक प्रगति के अंतर्गत निहित है।

समझौते का निष्पादन करते हुये

नवम्बर 2024 के लिए सीएसआर उपलब्धियां

काकरापार गुजरात स्थल की सीएसआर परियोजना के तहत एनपीसीआईएल–काकरापार गुजरात स्थल ने सरकारी अस्पताल, मांडवी, जिला सूरत के साथ दिनांक22/11/2024 को सीएसआर परियोजना केपीएसएस/एचएलटी/2024–25/7 के अंतर्गत "सरकारी अस्पताल, मांडवी, जिला सूरत के लिए चिकित्सा/स्वास्थ्य उपकरणों का प्रावधान"के लिए अनुमानित लागत रू. 91,50,000/– के साथ एक समझौता ज्ञापन निष्पादित किया है। सरकारी अस्पताल, मांडवी का उद्देश्य प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, चिकित्सा राहत संबंधित गतिविधियों के माध्यम से तथा राज्य और केंद्र सरकार द्वारा घोषित सभी स्वास्थ्य और चिकित्सा योजनाओं के कार्यान्वयन से नस्ल, धर्म या जाति के भेद के बिना गरीबों पर अधिक जोर देने के साथ ग्रामीण समुदाय के स्वास्थ्य और समग्र विकास को बढ़ावा देना है।

इस अवसर पर काकरापार स्थल की ओर से श्री नितिन जे. केवट, मुख्य अभियंता (आईटी) एवं अध्यक्ष, सीएसआरसी, श्री अरविंद एल. भट्ट, प्रबन्धक (मा.सं.) एवं सदस्य सचिव, सीएसआरसी, श्री ईतेश एन. गामीत, सहा. जन संपर्क अधिकारी एवं सदस्य, सीएसआरसी तथा सरकारी अस्पताल, मांडवी से डॉ. परिमल चौधरी, अधीक्षक (CI–1), डॉ. एच.बी. चौधरी, डॉ. पंकज आर. गामित उपस्थित रहे।

यह परियोजना सतत विकास लक्ष्य/राष्ट्रीय लक्ष्य संख्या 3 जो की उत्तम स्वास्थ एवं कल्याण के अंतर्गत निहित है।

समझौते का निष्पादन करते हुये

काकरापार गुजरात स्थल की सीएसआर परियोजना के तहत एनपीसीआईएल–काकरापार गुजरात स्थल ने सरकारी अस्पताल, मांडवी, जिला सूरत के साथ दिनांक 22.11.2024 को सीएसआर परियोजना केपीएसएस/एचएलटी/2024–25/7 के अंतर्गत "सरकारी अस्पताल, मांडवी, जिला सूरत के लिए चिकित्सा/स्वास्थ्य उपकरणों का प्रावधान" के लिए अनुमानित लागत रू. 91,50,000/– के साथ एक समझौता ज्ञापन निष्पादित किया है। सरकारी अस्पताल, मांडवी का उद्देश्य प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, चिकित्सा राहत संबंधित गतिविधियों के माध्यम से तथा राज्य और केंद्र सरकार द्वारा घोषित सभी स्वास्थ्य और चिकित्सा योजनाओं के कार्यान्वयन से अलग, धर्म या जाति के भेद के बिना गरीबों पर अधिक जोर देने के साथ ग्रामीण समुदाय के स्वास्थ्य और समग्र विकास को बढ़ावा देना है।

इस अवसर पर काकरापार स्थल की ओर से श्री नितिन जे. केवट, मुख्य अभियंता (आईटी) एवं अध्यक्ष, सीएसआरसी, श्री अरविंद एल. भट्ट, प्रबन्धक (मा.सं.) एवं सदस्य सचिव, सीएसआरसी, श्री ईतेश एन. गामीत, सहा. जन संपर्क अधिकारी एवं सदस्य, सीएसआरसी तथा तालुका स्वास्थ्य कार्यालय, मांडवी से डॉ. नरेंद्र चौधरी, तालुका स्वास्थ्य अधिकारी, श्री धनसुखभाई गामीत, प्रशासक, श्री उमेदभाई चौधरी, तालुका वित्त सहायक,उपस्थित रहे।

यह परियोजना सतत विकास लक्ष्य/राष्ट्रीय लक्ष्य संख्या 3 जो की उत्तम स्वास्थ एवं कल्याण के अंतर्गत निहित है।

समझौते का निष्पादन करते हुये

सीएसआर परियोजना संख्या: KPSS/HLT/2024–25/8 के तहत दिनांक 26/11/2024 को जिला क्षयरोग अधिकारी, जिला क्षयरोग केंद्र, व्यारा, जिला तापी के साथ "तापी जिले मे क्षयरोग के चिन्हित रोगियों के लिए पोषण किट का प्रबंधन" हेतु अनुमानित लागत रू. 45,00,000/– की राशि के लिए एक समझौता ज्ञापन निष्पादित किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार ने अपेक्षा व्यक्त की है कि वर्ष 2025 तक भारत से क्षय रोग उन्मूलन करना है। वर्ष 2025 तक क्षयरोग मुक्त करने के लक्ष्य के साथ भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा एक महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसके एक भाग के रूप में, क्षय के रोगियों के उपचार में नतीजन सुधार लाने के लिए क्षय के

रोगियों को पोषण किट की अतिरिक्त सहायता के लिए केंद्रीय क्षयरोग प्रभाग ने सामुदायिक सहयोग से कार्यक्रम की शुरुआत की है। जिला क्षयरोग अधिकारी, जिला तापी–व्यारा ने तापी जिले में क्षयरोग के चिह्नित 500 रोगियों के लिए पोषण किट का एक वर्ष के लिए प्रबंध कराने का अनुरोध किया था।

इस अवसर पर काकरापार स्थल की ओर से श्री बी. श्रीधर, अपर मुख्य अभियंता (ईएमजी) एवं वैकल्पिक अध्यक्ष, सीएसआरसी, डॉ. कृणाल आर. चौहान. चिकित्सा अधिकारी एवं सदस्य, सीएसआरसी, श्री ईतेश एन. गामीत, सहा. जन संपर्क अधिकारी एवं सदस्य, सीएसआरसी तथा जिला क्षयरोग केंद्र, व्यारा, से डॉ. आर. एम. चौधरी, जिला क्षयरोग अधिकारी, डॉ. ग्रीष्मा गामीत, डीपीसी, श्री कर्तिक चौधरी, लेखाकार उपस्थित रहे।

यह परियोजना सतत विकास लक्ष्य/राष्ट्रीय लक्ष्य संख्या 3 जो कि उत्तम स्वास्थ्य एवं कल्याण के अंतर्गत निहित है।

समझौते का निष्पादन करते हुये

इतेश गामित
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

दो बातें मानसिक दुर्बलता प्रकट करती हैं एक तो बोलने के अवसर पर चुप रहना, दूसरे चुप रहने के अवसर पर बोलना।

शेखसादी

हमसे है जमाना

सारा जहाँ कहता, जमाना खराब है,
क्या ये जमाना हमसे नहीं है?
हम सबकी एक ही सोच,
कि.....
सभी को है सिर्फ अपनी ही पड़ी,
अपना काम बनता,
बाढ़ में जाए जनता।
लेकिन ....!
बाढ़ में बहती है कौन सी जनता,
अपना काम है किसका, बनता।

ये जनता है कौन ?
हैं क्यूँ हम सब मौन ?

रेत की तरह फिसलती है ये जिंदगी,
सुकून पाने को सदा ही करती ये बंदगी।

हम सब कहते, सोचते,
अपने आप को तसल्ली देते।
कि.....
आगे से अच्छा होगा,
ओर हमसे ही सब होगा।

लेकिन सबसे पहले कौन?
आती बात पहल की, हम फिर से मौन ।
क्यूंकि ....हम भूल जाते ,
हम ही जनता ,
हमसे ही जमाना बनता।
आती है बातें जब, वाद विवाद की , चाय पे चर्चा की
सबसे अच्छी बात है बनती, एकता के मिसाल की।
काश ! काश !
नहीं, काश नहीं , हकीकत में बात ये बन जाए,
सकारात्मकता की एक ही बूंद, हर मस्तिष्क में घुल–मिल जाए,
इशारे के इंतजार में दरवाजे पर खड़ी, वो खुशी घर के अंदर ही आ जाए।
क्यूंकि.....

हम ही जनता,
हम ही से जमाना बनता।

गाशु डी चौधरी
वरिष्ठ सहायक – II
वित्त एवं लेखा, अनुभाग

वाराणसी से मुंबई-सपनों की पहली ऊँची उड़ान

गाँव की गलियों से निकलकर उच्च शिक्षा के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी पहुँचना ही मेरे लिए किसी उपलब्धि से कम नहीं था। लेकिन असली मोड़ तब आया जब 26 वर्ष की उम्र में, पढ़ाई के बाद एनपीसीआईएल में पहली नौकरी मिली – और उसके साथ आया जीवन का एक बड़ा पहला अनुभव हवाई जहाज से सफर करने का मौका। वह भी वाराणसी से मुंबई जैसे महानगर तक। इस सफर में सिर्फ दूरी नहीं तय होनी थी, बल्कि एक दुनिया से दूसरी दुनिया तक की यात्रा होनी थी – सपनों की दुनिया तक। सपना था, जो धीरे–धीरे सच में बदलता जा रहा था। टिकट मेरे मोबाइल में था, बैग में जरूरत भर के कपड़े थे, और दिल में अनगिनत उम्मीदें। वाराणसी एयरपोर्ट की ओर जाते समय मन बार–बार पीछे मुड़ता रहा– गलियों, घाटों, गंगा और उस जमीन की ओर जिसने मुझे पाला, बड़ा किया, और अब विदा कर रही थी। बाबतपुर एयरपोर्ट पहलीबार गया था–सब कुछ शांत, छोटा और अपनापन भरा, पर मेरे लिए वह पल बहुत बड़ा था।जब सिक्योरिटी चेक हुआ और बोर्डिंग पास हाथ में आया, तो ऐसा लगा जैसे कोई युद्ध जीत लिया हो। विमान में बैठने से पहले मैं बार–बार खिड़की से बाहर देखता रहा–रनवे, उड़ान भरते जहाज, और वहाँ मौजूद लोगों की चाल–ढाल सब देखता रहा। सब कुछ ऐसा था, जो पहले कभी देखा नहीं था। विमान के दरवाजे से अंदर कदम रखा, तो एक ठंडी हवा का झोंका आया और मैं भीतर चला गया–वह झोंका सिर्फ एयर कंडीशनर का नहीं था, वह मेरे जीवन में प्रवेश करती नई शुरुआत की आहट थी। चेक–इन की प्रक्रिया पूरी करने के बाद जैसे ही सुरक्षा जांच पार की, और विमान के लिए प्रतीक्षालय में जाकर बैठा, तो खुद को थोड़ी देर के लिए वहीं ठहर जाने दिया। वह इंतजार अब बोझिल नहीं, बल्कि मीठा हो चला था। स्क्रीन पर फ्लाइट का नंबर दिखा, और जब बोर्डिंग शुरू हुई, तो दिल की धड़कन ने रफ्तार पकड़ ली। वह पहला कदम, विमान के दरवाजे पर चढ़ते हुए, शायद जिंदगी का सबसे लंबा और सबसे भारी कदम था –क्योंकि उसमें सालों की मेहनत, माता–पिता के त्याग, और अपनी ही आँखों में देखे गए सपनों का भार था।

विमान के भीतर प्रवेश करते ही एक और दुनिया ने मेरा स्वागत किया। हवादार खिड़कियाँ, चमचमाती सीटें, मधुर मुस्कान के साथ अभिवादन करती फ्लाइट अटेंडेंट, और शांत वातावरण– सब कुछ सपना लग रहा था। मेरी सीट खिड़की के पास थी। बैठते ही मैंने सीटबेल्ट बांधी, और उत्सुकता से बाहर झाँकने लगा। जैसे ही विमान ने रफ्तार पकड़नी शुरू की और रनवे पर तेजी से भागते हुए जमीन छोड़ी, तो मेरा दिल भी एक पल को उछल पड़ा। जमीन से दूर होते–होते, वाराणसी की विशाल इमारतें भी खिलौनों की तरह लगने लगीं। और फिर अचानक हम बादलों के बीच थे– एक ऐसी ऊँचाई पर जहाँ सब कुछ शांत था, लेकिन मेरे भीतर का तूफान शब्दों में उतर रहा था। विमान के भीतर सर्व किए गए नाश्ते से ज्यादा स्वादिष्ट वह एहसास था कि अब मैं खुद की मेहनत से सफर कर रहा हूँ। खाने की हर चीज में आत्मगौरव का स्वाद था।मैं बार–बार खिड़की से बाहर झाँकता रहा। दूर तक फैला नीला आसमान, सूरज की किरणें जो विमान की खिड़की से छनकर आ रही थीं, और बादलों की सतरंगी परतें– यह सब किसी स्वप्नलोक का हिस्सा लग रहा था। उस ऊँचाई पर पहुँचकर मैं जैसे खुद कोही देख पा रहा था – वह छोटा लड़का जो कभी अपनी पढ़ाई के लिए चप्पल घिसता था, आज वह अपने सपने के बिल्कुल पास था। वाराणसी से मुंबई की इस पहली उड़ान ने मेरी जिन्दगी की दिशा ही नहीं बदली, बल्कि मेरी सोच, आत्मबल और नजरिया भी बदल दिया। वह सिर्फ एक ट्रैवल जर्नी नहीं थी– वह मेरी परिपक्वता की पहली उड़ान थी।

अब जब कभी वाराणसी की गलियों की याद आती है, तो एक गहरी साँस लेकर कहता हूँ–

मैं आज जहाँ हूँ, वहाँ तक पहुँचने के लिए मुझे उड़ना ही था। और उस उड़ान की पहली पंक्ति थी – वाराणसी से मुंबई।

प्रशांत पाठक
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगाएँ।
हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।

विनोबा भावे

नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र की गतिविधियां

काकरापार गुजरात स्थल के नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र में जुलाई – 2024 से दिसम्बर 2024तक निम्नलिखित प्रशिक्षण गति–विधियों का आयोजन किया गया।

1. नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र द्वारा जनवरी से जून माह तक मे कुल 19740 पर्सन– डेज प्रशिक्षण हुए।
2. अनुज्ञापित कार्मिक केएपीएस 1 व 2 एवं केएपीपी 3 व 4 (ऑपरेशन एवं एफ एच एस) के लिए पुनः प्रशिक्षण करवाया गया जिसमें कुल 35 कार्मिकों ने भाग लिया।
3. इलैक्ट्रिकल पुनः पदनाम का प्रशिक्षण एवं साक्षात्कार करवाया गया जिसमे केएपीएस 1 व 2 एवं, केएपीएस 3 व 4 से कुल 92 कार्मिकों ने भाग लिया।
4. केएपीपी–3 और 4 के 27 उम्मीदवारों के मूल्यांकन के लिए योग्यता साक्षात्कार समिति की बैठक कराई गई।
5. नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र द्वारा 801 कार्मिकों को कुछ अनिवार्य प्रशिक्षण दिये गए। जिनका उदेश्य हमे अपने आस–पास हो रही दुर्घटना को होने से रोकना तथा विपरीत परिस्थिति में अपने आप तैयार रखना है।

प्रशिक्षण	संख्या
प्रथम उपचार ऐड प्रशिक्षण	159
सामान्य सुरक्षा प्रशिक्षण	257
औद्योगिक एवं अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण	183
आपात स्थिति तैयारी प्रशिक्षण	202

6. वैज्ञानिक सहायक और तकनीशियनों (07प्रशिक्षु) का ऑन–द–जॉब प्रशिक्षण विभिन्न वर्गों यानी ओपीएन, एमएमयू, ईएमयू, सीएमयू, एफएचयू, क्यूए में केएपीपी–3 व 4 एंव केएपीएस–1 व 2 में प्रगति पर है।
7. केएपीएस–1 व 2 एवं केएपीएस–3 व 4 के ईओटी क्रेन संचालन के पुनः प्राधिकरण के लिए अंतिम साक्षात्कार आयोजित किया गया था। कुल 07 ईओटी क्रेन ऑपरेटरों को पुनः प्राधिकृत किया गया.
8. अन्य महत्वपूर्ण प्रशिक्षण की झलकियाँ :–

- काकरापार गुजरात साइट के 29 कर्मचारियों के लिए (01 छव.) 'टीम बिल्डिंग एंड डेवलपमेंट 'प्रशिक्षण आयोजित किए गए।
- केएपीएस–1 व 2 एवं केएपीपी– 3 व 4 कर्मियों के लिए उन्नत विकिरण सुरक्षा प्रशिक्षण आयोजित किया गया था।
- सामग्री प्रबंधन उपकरणों के प्रशिक्षण और प्राधिकरण की प्रक्रिया की समीक्षा और संशोधन किया गया
- बीएसडी प्रशिक्षण केएपीएस : 3 – 4 के बीएसडी से पहले आयोजित किया गया था। कुल 02 सत्र आयोजित किये गए और 255 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।
- कौशल आधारित प्रशिक्षणः एनटीसी, केएपीएस में "स्वेगेलोक योग्यता" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में कुल 11 कर्मचारियों ने भाग लिया और 22 व्यक्ति दिवस की भागीदारी हासिल की गई।
- आई.एम.एस. आंतरिक लेखा परीक्षक प्रशिक्षण बी.आई.एस. के संकाय द्वारा आयोजित किया गया। कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

9. वोकेशनल ट्रेनिंगः– इंजीनियरिंग कॉलेजों से कुल 66 ने एनटीसी को वोकेशनल/इंटर्नशिप ट्रेनिंग के लिए रिपोर्ट किया। सूचना केंद्र, कार्यशालाओं और सिम्युलेटर में परिचयात्मक, व्याख्यान और दौरे के बाद, उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए विभिन्न अनुभागो जैसे, एच आर, ओ एंड एम, केएपीएस 1–2 एवं , केएपीएस 3–4 की रिपोर्ट करने की सलाह दी गई।
10. अप्रेंटिस बैचः– काकरापार–गुजरात साइट के विभिन्न अनुभागों में प्रशिक्षु प्रशिक्षण (बैच–2024–1) प्रगति पर है। वर्तमान में49 प्रशिक्षु स्थल के विभिन्न अनुभागों में प्रशिक्षण ले रहे हैं।
11. कार्यकारी प्रशिक्षुओं : 49 कार्यकारी प्रशिक्षुओं ने एक वर्ष के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए काकरापार गुजरात साइट पर रिपोर्ट किया। कार्यक्रम का उद्घाटन सभी वरिष्ठ प्रबंधन की उपस्थिति में आरएपीएस, केजीएस, केकेएनपीपी और केएपीएस साइट के साथ किया गया। सभी कार्यकारी प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहा है श्री यश लाला स्टेशन निदेशक 3 एवं 4 ने काकरापार गुजरात साइट से प्रबंधन प्रतिनिधि के रूप में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 30 कार्यकारी प्रशिक्षुओं बैच के साथ बातचीत की।
12. जनजागरुकता कार्यक्रमः जन जागरूकता कार्यक्रम के तहत विभिन्न क्षेत्रों के कुल 1315 आगंतुकों ने केएपीएस – 1 व 2 एवं केएपीएस 3 व 4 का भ्रमण किया। जिसमे कुल 1315 बुकलेट/पैफ्लेट/ मैगजीन/ बुधिया पुस्तिका विद्यार्थियों, आईजी (सीआईएसएफ) के परिवार के सदस्य, गुजरात, मध्य प्रदेश और त्रिपुरा के जिला स्तरीय चिकित्सा अधिकारी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, दमन, विद्या भारती ट्रस्ट कॉलेज ऑफ मास्टर इन कंप्यूटर एप्लीकेशन (एमसीए और एमबीए) उमरख, लेडीज क्लब अणुमाला टाउनशिप,एन सी सी 5 गुजरात बी एन, सूरत, 6 गुजरात गर्ल्स बटैलियन एन सी सी, सूरत, आईजी सूरत, एनएसजी कमांडों एनपीसीआईएल कार्मिको के परिवार एवं उनके रिश्तेदार एवं अन्य प्रतिनिधियों में बांटी गई।

ऋषब कुमार सिंह
आशु लिपिक ग्रेड – 1
प्रशिक्षण अनुभाग

नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ

राजभाषा गतिविधियाँ

राजभाषा अनुभाग हिंदी के विकास के सतत प्रयासों से सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग और लोगों को मूल रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहने की शृंखला में माह जुलाई से दिसंबर, 2024 में समाप्त अवधि के दौरान काकरापार गुजरात स्थल पर राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित निम्नलिखित गतिविधियां सम्पन्न की गई।

1. आशुलिपि प्रशिक्षण : हिंदी आशुलिपि के 05 कार्मिकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी रखा गया।

2. वैज्ञानिक संगोष्ठी : दिनांक 26/07/2024 हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 08 कर्मचारियों ने विविध विषयों पर पेपर प्रस्तुत किए।इस संगोष्ठी में कुल 33 कार्मिकों ने भाग लिया। जिसमें विशुद्ध रूप से तकनीकी प्रकृति के वैज्ञानिक तथ्यों से भरे कार्यों को भी सुगमता के साथ हिंदी में भी किया जा सकता है इसमें निम्न विषयों पर तकनीकी आलेख प्रस्तुत किए गए। इसकी विशेषता यह कुछ आलेख हिंदीतर भाषी व्याख्याताओं द्वारा भी प्रस्तुत किए गए। जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों के साथ–साथ केंद्र निदेशक व स्थल निदेशक महोदय भी उपस्थित थे।

इस वैज्ञानिक संगोष्ठी 1. मेंगैडोलियम नाईट्रेट एक अनोखा पोइजन, 2. प्रवाह त्वरित क्षरण, 3. अलारा के सिद्धांत की नाभिकीय 4. विद्युतघर में पालना, 5. साइबर अपराध की रोकथाम कैसे करें?, केएपीएस 3 एवं 4 में (FOAK प्रणाली), 6. दंत स्वास्थ्य शिक्षा, लघु प्रमापीय रिएक्टर की परिकल्पना, स्वतः उर्जित न्यूट्रान संसूचकों का अनुभव की विषय वस्तु पर बहुत ही रोचक और ज्ञान वर्धक प्रस्तुति दी गई थी।

3. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक : इस छमाही के दौरान दिनांक 27.8.2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सूरत की बैठक का आयोजन केएपीएस काकरापार गुजरात स्थल पर किया गया। इस बैठक में 53 सदस्य कार्यालयों ने भाग लिया। इस बैठक की अध्यक्षता मुख्य आयकर आयुक्त द्वारा सम्पन्न की गई। इसमें सदस्य संस्थाओं की हिन्दी प्रगति की समीक्षा की गई और हिन्दी की गति में सराहनीय प्रगति या वार्षिक कार्यक्रमों के अनुरूप प्रगति के लिए संस्थागत सदस्यों द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया गया। नराकास द्वारा हिन्दी के क्षेत्र उल्लेखनीय योगदान के लिए सदस्य कार्यालय की रिपोर्ट के आधार पर हिन्दी कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।

4. कार्यशाला का आयोजन : माह जुलाई से दिसंबर 2024 को सम्पन्न छमाही में राजभाषा कार्यान्वन हेतु निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दो एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन कियागया जिसमें 04 सितंबर, 2024को कार्यशाला कार्मिकों के लिए थी और 28 नवंबर को एक कार्यशाला अधिकारी स्तर की थी। जिसमे क्रमशः कुल 26 कार्मिकों और 29 अधिकारियों और ने भाग लिया।

इन कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग संबंधी कठिनाई निराकरण, शब्दावली परिचय, कार्यालयीन वाक्य अभ्यास, हिंदी मानकीकरण एवं प्रोत्साहन एवं अपेक्षाओं को प्रतिभागी कार्मिकों के समक्ष तार्किक और औचित्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर प्रेरित किया गया।

5. राजभाषा निरीक्षण: इस अवधि के दौरान हिन्दी कार्य प्रगति के वास्तविक मूल्यांकन के लिए अनुभागों का राजभाषा कार्यान्वयन के संदर्भ में निरीक्षण किया गया तथा अनुभाग में पाई गई कमियों को सुधारा गया।

6. हिंदी दिवस 14 सितंबर समारोह व हिंदी पखवाड़ा: दिनांक 5 से 23 सितंबर, 2024 को हिंदी पखवाड़ा मनाया गया इस दौरान संयंत्र स्थल एवं टाउनशिप में स्थित डिजिटल सूचना पट्टों पर हिन्दी दिवस के पोस्टर आदि प्रदर्शित कराए गए तथा राजभाषा प्रचार–प्रसार के लिए कुल निम्न 9 हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

(क) हिंदी निबंध प्रतियोगिता (ख) हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता (ग) सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता (घ) हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता (ङ) हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता (च) वाद–विवाद प्रतियोगिता (छ) कर्मचारियों के लिए काव्य पाठ प्रतियोगिता (ज) गृहिणियों के लिए सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता (झ) गृहिणियों के लिए काव्य पाठ प्रतियोगिता कराई गईं।

हिन्दी पखवाड़े के अंत में दिनांक 28.9.2024 को भारत सरकार के गृहमंत्री, परमाणु ऊर्जा विभाग (सचिव), अध्यक्ष, एनपीसी–आईएल (सीएमडी), के संदेशों का वाचन किया गया। इस अवसर पर प्रबन्धक राजभाषा ने राजभाषा गतिविधियों के बारे में वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा प्रशासनिक प्रमुख (मा.सं.) ने प्रशासनिक सम्बोधन किया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अधीक्षक इकाई 3 एवं 4 के श्री ए पी फड़के, मुख्य अतिथि ने हिन्दी दिवस समारोह का अध्यक्षीय सम्बोधन किया तथा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए । इन प्रतियोगिताओं में कुल 250 कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में अंत में श्री एस वी देशिकामणि वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

7. हिंदी कवि सम्मेलन: राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में दिनांक 28.12.2024 को अणुमाला टाउनशिप ओपन एयर थिएटर में अखिल भारतीय हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें भारत के ख्याति प्राप्त कवियों ने अपनी सशक्त हास्य, व्यंग्य, औज और गीतों की भावनात्मक काव्य शृंखला से उपस्थित दर्शकों ने अपने ठहाकों, वाह–वाह और तालियों के गड़गड़ाहट से कवि सम्मेलन की सार्थकता पर मोहर लगा दी।

राजभाषा

हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

हिंदी दिवस के अवसर पर उपस्थित मुख्य अधीक्षक 3 व 4 श्री ए.पी. फडके, श्री पी.एस. तोमर प्रमुख (मासं)

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित काव्यपाठ /स्पर्धा में कविता प्रस्तुत करती हुई महिलाएं

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के छायाचित्र

हिंदी पखवाड़े के दौरान निर्णायक मंडल अपने विचार व्यक्त करते हुये

हिंदी पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिता में भाग लेते कार्मिक

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

वैज्ञानिक संगोष्ठी की झलकियाँ

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन हेतु हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु काकरापार गुजरात स्थल के ओपन थिएटर में दिनांक 28 दिसम्बर 2024 को एक भव्य हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और सम्मान बढ़ाना तथा हिंदी साहित्य के हास्य रस से श्रोताओं को जोड़ना था। इस कार्यक्रम में देशभर के ख्यातिप्राप्त हास्य कवियों ने भाग लिया और अपनी रचनाओं से श्रोताओं को ठहाकों से सराबोर कर दिया। इस आयोजन ने न केवल श्रोताओं का मनोरंजन किया, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति उनके प्रेम और सम्मान को भी जागृत किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ एनपीसीआईएल काकरापार के स्थल निदेशक संजय कुमार मालवीय दवारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। स्थल निदेशक महोदय ने उद्घाटन भाषण में कहा कि 'हास्य कविता न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता का भी प्रभावशाली उपकरण है। हिंदी भाषा की समृद्धि और लोकप्रियता को बनाए रखने के लिए इस तरह के आयोजन अत्यंत आवश्यक हैं।

कार्यक्रम के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए प्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार तभी संभव है जब इसे आमजन के बीच सरल और मनोरंजक रूप में प्रस्तुत किया जाए। तत्पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ आमंत्रित कवियों ने किया जिसमें विभिन्न विधावों के कवियों ने अपनी प्रस्तुति दी। कवि सम्मेलन का संचालन श्री राजेश अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता थी देश के प्रसिद्ध हास्य कवियों की शानदार उपस्थिति, जिन्होंने अपनी हास्य रचनाओं से श्रोताओं को हँसी के सागर में डुबो दिया। कवियों की प्रस्तुतियाँ इस प्रकार रहीं:

1. शंभू शिखर (हास्य व्यंग्य): इन्होंने अपनी कविता में सामान्य जीवन से लेकर सामाजिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में हास्य कविता एवं व्यंग्य के माध्यम से जनता के बीच रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। इन सब के बीच उन्होंने एक अन्य कविता के माध्यम से हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति पर करारा व्यंग्य किया। उनकी प्रस्तुति पर श्रोताओं ने ठहाकों और तालियों की बौछार कर दी।
2. सुश्री पद्मिनी शर्मा (श्रंगार गीत) : सुश्री पद्मिनी शर्मा ने 'सरस्वति वंदना' शीर्षक के माध्यम से मनमोहक कविता प्रस्तुत की, कविता की शुरुआत सरस्वती वंदना की मधुर प्रस्तुति से हुई। जिसमें भगवती स्तुति और हिन्दी प्रेम के माध्यम से कविता पाठ किया। इसके अलावे उन्होने चुटकुले और व्यंग्य से सभा में हास्य का माहौल बना दिया।
3. राजेश चेतन (ओज व हास्य व्यंग्य): राजेश चेतन ने 'आम जनजीवन और देशप्रेम' पर केंद्रित कविता सुनाई। उन्होंने बड़ी ही चतुराई से पारिवारिक जीवन और हिंदी के प्रति समाज के रुख को हास्य के माध्यम से व्यक्त किया। उनकी प्रस्तुति पर श्रोताओं ने जमकर तालियाँ बजाई।
4. श्री संजय बंसल (हास्य व्यंग्य) : श्री संजय बंसल ने हिंदी को अपनाने की औपचारिकता पर हास्य के माध्यम से कटाक्ष किया। उनकी प्रस्तुति पर श्रोताओं ने खुलकर हँसी का आनंद लिया।
5. श्री राजेश अग्रवाल (संचालन गीत व हास्य व्यंग्य) : श्री राजेश अग्रवाल ने हास्य कवितापाठ के साथ अन्य कवियों के साथ संयोजक का भी काम किया। उन्होंने सरकारी दफ्तरों में हिंदी के उपयोग को लेकर उत्पन्न होने वाली जटिलताओं पर हास्यपूर्ण व्यंग्य किया। उनकी कविता ने श्रोताओं को खूब गुदगुदाया।

श्रोताओं ने कवियों की प्रस्तुतियों पर जोरदार तालियाँ बजाई और हास्य कविताओं का भरपूर आनंद लिया। विशेष रूप से शंभू शिखर और राजेश अग्रवाल की कविताओं को श्रोताओं ने खूब सराहा। पूरे कार्यक्रम के दौरान श्रोता ठहाकों से सराबोर रहे।

कार्यक्रम के समापन के अवसर पर काकरापार एनपीसीआईएल के स्थल निदेशक संजय कुमार मालवीय ने सभी कवियों को आदर सहित सम्मान भेंट किए। उन्होंने कहा कि **''हिंदी का प्रचार–प्रसार तभी संभव है जब इसे सहज, सरल और रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया जाए। हास्य कविता इस उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा करती है।''** अंत में कवि सम्मेलन के संचालक वरि. हिन्दी अनुवादक श्री एस. वी. देशिकामणि ने इस सफल आयोजन के लिए काकरापार एनपीसीआईएल के सभी श्रोताओं, सभी कवियों और पधारे वरिष्ठ अधिकारी जनों का आभार व्यक्त किया। अंत में सभी कवियों को विदाई के साथ न्योता देकर पुनः आगमन का अनुरोध किया और इस तरह कवि सम्मेलन कार्यक्रम का समापन हुआ।

यह हास्य कवि सम्मेलन काकरापार एनपीसीआईएल के इतिहास में एक अविस्मरणीय आयोजन बन गया। ओपन थिएटर में खचाखच भरे श्रोताओं ने इस कार्यक्रम में न केवल हँसी का उपहार दिया, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति उनके प्रेम और सम्मान को भी जागृत किया। कवियों की रचनाओं ने श्रोताओं को न केवल गुदगुदाया, बल्कि हिंदी भाषा के महत्व को भी रेखांकित किया। इस आयोजन ने यह सिद्ध किया कि हास्य कविता मनोरंजन का माध्यम होने के साथ–साथ सामाजिक और भाषाई चेतना का भी प्रभावशाली साधन है।

प्रशांत पाठक
(कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)
काकरापार गुजरात स्थल

कवि सम्मेलन की झलकियाँ

कविवर श्री शंभु शिखर

कवयित्री सुश्री पद्मिनी शर्मा

कविवर श्री राजेश चेतन

कविवर श्री संजय बंसल

काव्य मंच संचालक कविवर श्री राजेश अग्रवाल

कवि सम्मेलन के मूर्धन्य श्रोतागण स्थल निदेशक, केन्द्र निदेशक 1 व 2 तथा 3 व 4 एवं मुख्य अधीक्षक केएपीएस 3 व 4

एक नारी की अभिलाषा

सोचती हूं कि ऐसी आदर्श परिस्थिति का निर्माण हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

सुरक्षित हर क्षेत्र में आगे बढ़ती रहे बेटियां,
निर्भय होकर सफलता की सीढ़ियां चढ़ती रहें बेटियां।
सुरक्षित देश की हर सड़क और हर मैदान हो।
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

कानून देश का कुछ ऐसा हो कठोर,
भयमुक्त रहे हर अबला और किशोर।
चिंता मुक्त हर नारी का भविष्य और वर्तमान हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

आत्मनिर्भर भारत में हर नारी हो स्वयं निर्भर।
सहमी सी कभी ना हो सदा बनी रहे निडर,
स्वास्थ्य और समृद्धि से सजा हर नारी का आयुष्मान हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

अनिष्ट प्रथाओं पर हो संपूर्ण प्रतिबंध,
हो सकारात्मक सदा ऐसा सामाजिक संबंध,
बाल विवाह, घरेलू हिंसा का नहीं देश में कोई निशान हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

चिकित्सा स्वास्थ्य सुविधाएं ऐसी हो पर्याप्त,
निशुल्क–प्रसुति, शून्य बाल मृत्यु दर का लक्ष्य हो प्राप्त,
वंचित न कभी किसी माँ से उसकी संतान हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

मानसिकता बदल कर कुछ ऐसा हो सामाजिक वातावरण,
कभी पनपने भी ना पाए कोई अत्याचारी रावण,
हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी, विवेक का भान हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

झाँसी की रानी की तरह जो शत्रु को पराजित कर जाये,
मनूभाकर की तरह ओलंपिक से पदक जीत कर ले आये,
भारत की हर बेटी हर क्षेत्र में कुछ ऐसा कर दिखाए,
गर्व से सम्मानित मेरा देश हिंदुस्तान हो,
जहां सुरक्षित हो हर नारी और सर्वश्रेष्ठ उसका सम्मान हो।

रोशन कफील सैयद,
गृहिणी, अणुमाला टाऊनशिप

नींद की समस्या से छुटकारा दिलाएंगे ये 3 योगासन

उत्तानासन

इस योगासन में आपको सबसे पहले पैर फैलाकर सीधे खड़े होना है। इसके बाद सांस को छोड़ते हुए आगे की ओर झुकना है, इस बीच आपको सिर और शरीर को सीधी रेखा में रखना है और आगे की ओर झुकते हुए हथेलियों को जमीन पर टेकना है। इस बीच घुटने मुड़े हुए नहीं होने चाहिए और इस आसान में कम से कम 30 सेकंड रहकर आपको फिर सीधे खड़ा होना है और इसी प्रकिया को 5 से 10 मिनट तक दोबारा दोहराना है।

बालासन

बालासन में आपको घुटने मोड़कर एड़ियों के बल पर बैठना होता है और सांस अंदर खींचते हुए दोनों घुटनों को फैलाकर आगे की ओर झुकना होता है। इसके बाद सिर को दोनों घुटनों के बीच रखकर सांस छोड़ना है और फिर दोनों हाथों को सामने की ओर फैला लेना है। इस बीच ध्यान रहे कि दोनों कोहनी घुटनी की सीध में रहनी चाहिए। इस पोजीशन में आप 30 सेकंड तक बने रह सकते हैं।

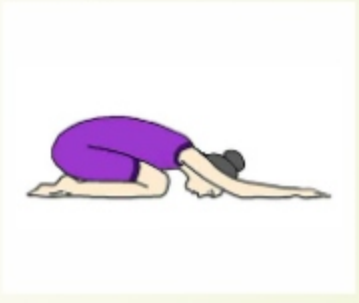

सुप्त वक्रासन

इस योगासन में जमीन पर घुटने के निचले हिस्से और पंजों को टिकाना होता है और धीरे–धीरे हाथों को उठाकर पीछे की ओर ले जाते हुए फर्श पर लेटना होता है। इसमें दाहिने घुटने से बाएं पैर के घुटनों को दबाना होता है और शरीर को स्ट्रेच करते हुए थोड़ा होल्ड करना होता है। ऐसा ही आप दूसरी दिशा में भी करें। बता दें, इससे रीढ़ की हड्डी को आराम मिलता है और मांसपेशियों में खिंचाव भी कम होता है।

संकलन लोकमत समाचार

हमारे सामाजिक सरोकार

वर्तमान समय आर्थिक विकास का युग है। इसमें अधिकाधिक धन कमाने और भौतिक संसाधन एकत्र करने पर बल दिया जाता है। अतः आज हम इस अंधी प्रतियोगिता का अनचाहा हिस्सा बने हुए हैं समाज में स्वयं को प्रतिष्ठापित करने और उसे बनाए रखने के लिए सभी जी जान से लगे हुए हैं। मगर इन सबके बीच हम अपने सामाजिक सरोकारों और स्थापित संस्कृति को लगातार अनदेखा कर भूलते जा रहे हैं।

जिन कार्यों, संस्कारों या रिवाजों से जीवन की वास्तविक उमंग और जीवन्तता झलकती है उन्हें हम पुरातन रुढ़ी बताकर नकार दे रहे हैं। जन्म, विवाह, व्रत, त्यौहार, उपवास आज दिखावे के लिए नाम मात्र के रह गए हैं। ग्रामीण भारत की आत्मा कहे जाने वाले मेले, अब समाप्त होते जा रहे हैं। मिलन महज अब मोबाईल पर ही हो जाता है। घर पर आने वाले अतिथि अब घट रहे हैं। घर के बालकों द्वारा उनका अभिवादन का संस्कार अब समाप्त ही हो चुका है। वे अब अपने कमरों से बाहर नहीं झांकते। आपसी रिश्ते केवल नाम के रह गए हैं। उन्हें निभाने का समय अब किसी के पास नहीं रहा। अपनी निजता या प्रायवेसी के नाम पर हम अपनों से लगातार दूर होते जा रहे हैं। अब घरों में एक साथ बैठकर भोजन तक नहीं किया जाता है। सबका अपना–अपना समय हो गया है।

विवाह समारोह अब मात्र खानापूर्ति के लिए रह गए हैं। संगीत के नाम पर केवल कानफोड़ू तीव्र संगीत सुनाई पड़ता है। अब न विनायक बिठाने के गीत किसी को याद है न कोई गाना चाहता हैं। हल्दी या महिला संगीत भी मात्र डी जे का शोर बनकर रह गया है। विदाई के गीत जिसे सुनकर गाँव मोहल्ले के छोटे –बड़े की आँखें भीग जाया करती थीं , अब किसी को याद तक नहीं रहे !

सामाजिक समरसता अब जातीय संगठनों की दासी बनकर रह गई है। गाँव हो या शहर, इन संगठनों के हर जगह अखाड़े बन गए हैं। होली या दीवाली पर मिलना, मिलाना, मिठाइयाँ बनाना, रिश्तेदारों और परिवार वालों के साथ साथ पड़ोसियों को भी सस्नेह भेजना अब सिर्फ बाजार के भरोसे हैं। अब केवल ऑनलाइन मिठाइयाँ या उपहार भेजकर रिश्तो और प्रेम की इतिश्री कर ली जाती है। यही अब आपसी प्रेम या स्नेह के प्रकटीकरण का दिखावा मात्र रह गया है। अब कोई चाचा या भाई इन त्यौहारों पर परदेश से गाँव नहीं आता है और न ही आना चाहता है। अब किसी को भी अपने माता–पिता, या चचेरे–फुफेरे से मिलने की जरुरत महसूस नहीं होती है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा एकल परिवार के चलन ने आत्मीयता को निगल लिया है। उस पर अत्यधिक महत्वाकांक्षाओं और उनके पूरा न होने से उत्पन्न कुंठाओं ने मानवीय संवेदनाओं को पूरी तरह से क्षीण कर दिया है। आज हमें अपने वास्तविक जीवन के सरोकारों को पहचानने की आवश्यकता है। उन्हें सहेजकर और संवारकर समाज को फिर से सजीव बनाने की जरुरत है।

यह हम सब का उत्तरदायित्व है कि हम वर्तमान पीढ़ी को हमारे सरोकारों से रूबरू करवाएं। उन्हें निजता और दिखावे की संस्कृति जैसे खोखले आचरणों से बाहर निकालें और अपनी वास्तविक संस्कृति से परिचित करवाएं।

आएं, हम सब मिलकर अपने अतीत को पहचाने और भारत को फिर से समृद्ध बनाने की दिशा में अपना–अपना योगदान दें, तभी भारत विश्व गुरु की राह पर आगे बढ़ सकेगा।

धन्यवाद।

जय भारत ! जय हिन्द !!

खीमाराम मेघवाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय काकरापार

लम्हा

इक नया रंग दिखता है जमाने का
जख्म नया ही, मरहम है पुराने का,
जब तक लड़ती रही कश्ती तब तक ही है
पार उतरने में वजूद, कहाँ रहता है किनारे का।
कभी जो पूछो तो कहे कुछ अपनी भी
कि.. कितना मुश्किल है खुद को समझाने का,
साँसों का मोल, कहाँ मिलता है बाजार में
कर्ज हर बार रह ही जाता है चुकाने का।
हर मोड़ पे शुरू किए एक नया सफर है
कोशिश रही. फिसलती रेत को हथेली में बचाने का,
हर मौसम में गुलाब है कि खिलते रहेंगे
अरमान होते है इन्हें, किताबों में छुपाने का।
यूँ कहे तो राह तकते, एक अरसा सा गुजर गया
इंतजार है किर भी..उस बहार के आने का,
बीते लम्हों के निशां, ढूढ़ते है अब भी जाने क्यूँ
हसरत है फिर, उन गलिओं में जाने का, खो जाने का।

विकास शर्मा
वैज्ञानिक सहायक/एफ
इकाई 1 एवं 2, एचपीयू

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस 2024 का आयोजन

संविदा एवं सामग्री प्रबंधन निदेशालय, एनपीसीआईएल अणुशक्तिनागर, मुंबई से प्राप्त अनुदेशों के अनुसरण में राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस 2024 के एक भाग के रूप में दिनांक 01 जुलाई, 2024 को माहवारी स्वास्थिकी/हाईजीन जागरूकता के अंतर्गत सुविधा सारथी योजना सत्र का आयोजन किया गया।

इस सुविधा सारथी योजना का उद्देश्य विद्यालय की छात्राओं (8वीं और 12वीं के स्तर) को दाताओं के सहयोग से प्रत्येक माह 10 नग सुविधा स्वास्थ्यकर पैड के पैकेट नि:शुल्क वितरण करने की एक व्यवस्था करना था।

इस अवसर पर बेडकुआ विद्यालय की उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यालय की सभी छात्राओं में स्वास्थ्य स्वास्थिकी (हाइजीन) को बढ़ावा देने के लिए डॉ आर एम वानखेडे, चिकित्सा अधीक्षक, केएपीएस चिकित्सालय के दिशा निर्देशन और पर्यवेक्षण में केएपीएस चिकित्सालय के डाक्टरों की टीम ने निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर), काकरापार गुजरात स्थल के सहयोग से सुविधा सारथी योजना कार्यान्वयन सत्र का आयोजन रखा गया।

इस सुविधा सारथी योजना कार्यान्वयन और जागरूकता सत्र में श्री एन जे केवट, अध्यक्ष, निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) काकरापार गुजरात स्थल और केएपीएस चिकित्सालय के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आर एम वानखेडे, डॉ. विदर्षणा वानखेडे, चिकि. अधि./जी, डॉ. शैलजा आर्या, बाल चिकित्सक, श्रीमती स्मिताबेन, प्राचार्य, कन्या विद्यालय, बेडकुआ, डॉ. कृणाल चौहान चिकि. अधि./डी और चल चिकित्सा वाहन दल के सदस्यगण इस कार्यक्रम में उपस्थित थे ।

कार्यक्रम में सर्व प्रथम श्री डी जी पाण्ड्या (भेषजज्ञ),केएपीएस चिकित्सालय ने सबका स्वागत किया और तत्पश्चात डॉ आर एम वानखेडे, चिकित्सा अधीक्षक, केएपीएस चिकित्सालय ने सुविधा सारथी योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. शैलजा आर्या, बाल चिकित्सक, केएपीएस चिकित्सालय ने माहवारी के बारे में बड़ी ही सार्थक जानकारी उपलब्ध कराई । यह सत्र बड़ा ही संवादी रहा जिसमें विद्यालय की छात्राओं और शिक्षिकाओं ने काफी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और उनसे प्रश्न पूछे इस पर डॉ. शैलजा जी ने सभी प्रश्नकर्ताओं के सवालों का जवाब देकर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया। इसे वहाँ उपस्थित लोगों द्वारा काफी सराहा गया। अंत में श्री एन जे केवट, अध्यक्ष, निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) काकरापार गुजरात स्थल ने सुविधा सारथी योजना और एनपीसीआईएल,काकरापार गुजरात स्थल द्वारा कराए जा रहे अन्य निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) की गतिविधियों कार्यक्रमों की जानकारी दी। और अंत में डॉ. कृणाल चौहान चिकि. अधि./डी केएपीएस चिकित्सालय के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस शिविर के आयोजन की सफलता में श्रीमती कांता परमार, नर्स/ई, केएपीएस चिकित्सालय का सहयोग विशेष सराहनीय रहा।

विद्यालय की छात्राओं को उनकी उचित स्वास्थकी/हाईजीन को बनाए रखने और उनके स्वास्थ्य को चुस्त–दुरुस्त रखने के लिए निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) काकरापार गुजरात स्थल द्वारा कुल 248 स्वास्थिकी/हाइजीन किट में 10 सुविधा स्वच्छता पैड के साथ टूथपेस्ट, टूथब्रश, टंग क्लीनर, बालों की कंगी, नहाने का टॉवल, नहाने और कपड़ा धोने का साबुन, केश तेल, नेलकटर, बिस्कुट इत्यादि का वितरण भी किया गया।

डॉ. कृणाल चौहान
चिकित्सा अधिकारी/डी

यदि तुम्हारा हृदय पवित्र है,तो
तुम्हारा आचरण भी सुंदर होगा।
यदि तुम्हारा आचरण सुंदर है,
तो तुम्हारे घर में शांति रहेगी।
यदि घर में शांति है, तो राष्ट्र में
सुव्यवस्था रहेगी और यदि राष्ट्र
में सुव्यवस्था है, तो समस्त
विश्व में शांति और सुख रहेगा।

राष्ट्रीय चिकित्सा दिवस - 2024

कार्यक्रम की झलकियाँ

श्री डी जी पाण्डय (भेषजज्ञ), केएपीएस चिकित्सालय

डॉ. आर एम वानखेडे, चिकित्सा अधीक्षक, केएपीएस चिकित्साल

श्री एन जे केवट, अध्यक्ष, निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)

डॉ. शैलजा आर्या, बाल चिकित्सक,केएपीएस चिकित्सालय

डॉ. कृणाल चौहान चिकि. अधि./डी, केएपीएस चिकित्सालय

जागरूकता सत्र में उपस्थित छात्राएं

जागरूकता सत्र में उपस्थित छात्राएं

महिला क्लब की गतिविधियाँ

महिला क्लब समिति ने अपनी अध्यक्षता के कुशल नेतृत्व में पूरे वर्ष सक्रिय रूप से कार्य किया और महिला सशक्तिकरण तथा सामुदायिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समिति ने विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, मनोरंजन, खेल, और शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन किया, जिससे सदस्यों के बीच आपसी मेल–जोल और सहभागिता को बढ़ावा मिला।

वार्षिक दिवस समारोहः उत्साह और सहभागिता का अनूठा संगम वार्षिक दिवस समारोह समिति के सबसे महत्वपूर्ण आयोजनों में से एक रहा। इस भव्य आयोजन में 150 से अधिक सदस्यों ने पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। महिलाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिनमें गीत, नृत्य और अन्य प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। इस कार्यक्रम को और विशेष बनाने के लिए CISF (केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल) तथा गुजरात राज्य महिला पुलिस, व्यारा से अतिथियों को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने अपने प्रेरणादायक अनुभव साझा किए और महिलाओं को सुरक्षा व आत्मनिर्भरता के विषय में जागरूक किया।

मनोरंजन और खेल गतिविधियाँः उत्साहवर्धक आयोजन समिति ने सदस्यों के मनोरंजन और शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए कई गतिविधियों का आयोजन किया। इनमें केवड़ी और उसके आसपास के प्राकृतिक स्थलों की सैर (पिकनिक) एक यादगार यात्रा रही। इस दौरान सदस्यों ने प्रकृति के सुंदर दृश्यों का आनंद लिया और एक–दूसरे के साथ आनंदपूर्वक समय बिताया।

इसके अलावा, क्लब ने विभिन्न इनडोर और आउटडोर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। इन खेलों में क्लब की लगभग सभी सदस्यों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे उनमें खेल भावना और टीम वर्क की भावना का विकास हुआ। वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं ने न केवल मनोरंजन किया बल्कि महिलाओं के आत्मविश्वास को भी बढ़ाया।

शैक्षिक यात्राः सुरक्षित संयंत्र संचालन पर जागरूकता समिति ने ज्ञानवर्धन और जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से लगभग 100 महिलाओं के लिए एक विशेष शैक्षिक यात्रा का आयोजन किया। इस यात्रा के अंतर्गत सदस्यों ने KAPS 1–2 तथा KAPS 3–4 संयंत्रों का दौरा किया। वहां उन्होंने विभिन्न संयंत्र अधिकारियों से मुलाकात की और संयंत्र के सुरक्षित संचालन, पर्यावरण सुरक्षा और कार्यस्थल की सुरक्षा व्यवस्थाओं पर विस्तृत चर्चा की। इस यात्रा ने महिलाओं को औद्योगिक सुरक्षा और संयंत्र संचालन से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने का अवसर दिया।

समाप्तिः एक सफल वर्ष की उपलब्धियाँ

नारी क्लब समिति ने पूरे वर्ष महिलाओं के लिए मनोरंजन, ज्ञानवर्धन, और सामुदायिक भागीदारी के कई अवसर प्रदान किए। समिति का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना है, और इस दिशा में किए गए सभी प्रयासों ने इसे सफलतापूर्वक साकार किया। भविष्य में भी समिति इसी ऊर्जा और उत्साह के साथ कार्य करती रहेगी, जिससे महिलाओं के विकास और समाज में उनकी भागीदारी को और अधिक सशक्त बनाया जा सके।

महिला मंडल के क्रियाकलाप

2024–25 की महिला क्लब समिति सदस्य

महिला मंडल वार्षिकोत्सव 2024–25 के नृत्य की कुछ झलकियाँ

प्लांट साइट दौरे की कुछ झलकियाँ

संयुक्त मॉडल को ध्यान पूर्वक देखकर समझाते हुए

महिला क्लब की महिलाएं प्रकृति की गोद में आनंदपूर्वक पिकनिक का लुत्फ उठाती हुईं, कुछ खास झलकियाँ

इनडोर खेलों की कुछ झलकियाँ

प्यार, उमंग और हरियाली तीज का खास एहसास

प्रतियोगिता में अपनी जीत का जश्न मनाती महिलाएं।

केटीआरडब्ल्यूआरसी गतिविधियां

काकरापार टाउनशिप रेसिडेंट वेल्फेयर एवं रीक्रीयसन क्लब द्वारा काकरापार टाउनशिप के सभी कर्मचारी एवं टाउनशिप निवासियों के लिए कई गतिविधियां, खेलकूद के साथ–साथ कई सांस्कृतिक समारोह भी आयोजित किए जाते हैं। उसमें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, गायन प्रतियोगिता, ऑफिशियल और फैमिली ट्रैकिंग, साइक्लिंग, गरबा कक्षा और स्पर्धा जैसी गतिविधियां शामिल है। इस वर्ष हमारे टाउनशिप में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया था। इस कार्यक्रम में मैनेजमेंट के साथ टाउनशिप के काफी लोगों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। योग दिवस के एक सप्ताह पहले केटीआरडब्ल्यूआरसी ने पूरे टाउनशिप में लोगों को योग का महत्व बताने के लिए टाउनशिप में कुछ चुनिन्दा जगहों पर बेहतरीन योगा ट्रेनेर्स द्वारा योग कक्षाओं का संचालन किया था। केटीआरडब्ल्यूआरसी हमेशा स्वास्थ्य से संबन्धित कई प्रोग्राम करवाते रहे हैं। उसमें साइकल रैली बहुत विशिष्ट है। केटीआरडब्ल्यूआरसी ने पिछले वर्ष सायकलथोन कराया था जिसमें अणुमाला से सोनगढ़ 51 किलोमीटर का अंतर तय किया था। केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा दिनांक 02.02.2024 को साइकिल रैली का आयोजन किया गया था। इस रैली में बहुत से टाउनशिप निवासियों ने हिस्सा लिया था। केटीआर–डब्ल्यूआरसी प्रकृति को समझने के लिए और उसे महसूस करने के लिए हमेशा ट्रैकिंग प्रोग्राम का आयोजन करती है। उसमें दो तरह की ट्रैकिंग होती है ऑफिशियल और फैमिली ट्रैकिंग। केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा मेढ़ा वॉटरफॉल के लिए एक ऑफिशियल ट्रैकिंग का आयोजन किया था। उसमें कई कर्मचारियों ने हिस्सा लिया था और केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा भनभा डूंगर फैमिली ट्रैकिंग और वंडर वॉटरफॉल फैमिली ट्रैकिंग का आयोजन किया था, उसमें टाउनशिप के कई परिवारों ने हिस्सा लिया था।

हर वर्ष डीएई स्पोर्ट्स एवं कल्चरल काउंसिल द्वारा पूरे भारत में डीएई की कई शाखाओं में खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं। तो इस वर्ष डीएई स्पोर्ट्स एवं कल्चरल काऊसलिंग द्वारा हमारे काकरापार में दिनांक 16.12.2024 से 20.12.2024 में टेबल टैनिस की इवैंट हुई थी जिसमें देश की विभिन्न साइट से कई टेबल टैनिस के कर्मचारी– खिलाड़ी पधारे थे और काकरापार मैनेजमेंट और केटीआरडब्ल्यूआरसी ने मिलकर उसे सफल और यादगार बनाया था। नवरात्रि गुजरात का बहुत बड़ा त्यौहार है और काकरापार टाउनशिप अगर गुजरात में हो और गरबा नहीं खेले ऐसा हो ही नहीं सकता, नवरात्रि के अवसर पर केटीआर–डब्ल्यूआरसी ने दो महीने गरबा की कक्षा कराए थे और कक्षा के साथ एक गरबा प्रतियोगिता का भी आयोजन किया था। केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा पिछले साल क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। जिसमें कई कर्मचारियों ने हिस्सा लिया था। जिसमें हमारे मैनेजमेंट की भी एक मैच कराई गयी थी। बीते वर्ष में केटीआरडब्ल्यूआरसी ने स्वतंत्रता दिवस पर एक गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता मे टाउनशिप निवासियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। हमारे देश के रक्षक हमारे देश के वीर जवानों के सम्मान में प्रतियोगिता द्वारा केटीआरडब्ल्यूआरसी की ओर से सलामी देने की हमने कोशिश की थी। केटीआरडब्ल्यूआरसी में अलग–अलग क्लासेस करवाए जाते हैं। स्केटटिंग कक्षा, ड्राइविंग कक्षा, योगा कक्षा, टेक्वांडो कक्षा, भरतनाट्यम कक्षा, गरबा के समय पर गरबा की कक्षा, क्लासिकल म्यूजिक कक्षा, गिटार कक्षा, ऐरोबीक कक्षा आदि। इसके अलावा केटीआरडब्ल्यूआरसी की ओर से अणुमाला टाउनशिप के ओपेन एयर थियेटर में फिल्म, क्रिकेट भी दिखाए जाते हैं।

सोनगढ़ फोर्ट ट्रैकिंग

अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस पर भाग लेते हुए हमारे टाउनशिप निवासी:

केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा आयोजित साइकल दिन पर और वाघपानी साइकल रैली में हिस्सा लेते हुए टाउनशिप निवासी

केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा आयोजित फॅमिली ट्रैकिंग बणभाडूंगर,

मेढ़ा वॉटरफॉल:

वंडर वॉटरफॉल फैमिली ट्रैकिंग:

केटीआरडब्ल्यूआरसी द्वारा आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

डीएई फाइनल इवैंट की शुरुआत करते हुए केंद्र निदेशक एवं अधिकारीगण

देश की भिन्न साइट से पधारे टेबल टैनिस के खिलाड़ी

डीएई इवैंट पर एईसीएस के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

टेबल टैनिस मैच

डीएई के समापन मे सांस्कृतिक नृत्य एईसीएस के बच्चों द्वारा

78th INDEPENDENCE DAY

बाइक यात्रा

उत्तर भारत के सुंदर दृश्यों और धार्मिक स्थलों का अनुभव करने का मेरा सपना इस यात्रा ने पूरा कर दिया। 15 दिनों की यात्रा में मैंने लगभग 4700 किलोमीटर की दूरी तय की, जिसमें मैंने हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनाथ और केदारनाथ जैसे प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों का भ्रमण किया।

मैंने अपने गुजरात के अणुमाला टाउनशिप से शुरुआत की और हरिद्वार पहुंचने के लिए दो दिन का सफर तय किया। इन दो दिनों में मैंने सफर का खूब आनंद लिया, रास्ते के नजारों का सदुपयोग किया और कई बार आराम भी किया। हरिद्वार पहुंचकर वहाँ के पवित्र वातावरण को महसूस किया। गंगा स्नान किया,घाटों पर पूजा की और स्थानीय संस्कृति का अनुभव किया।

इसके बाद मैं ऋषिकेश चला गया, जो योग और आध्यात्म का केंद्र माना जाता है। वहां का शांतिपूर्ण माहौल और हिमालय का दृश्यों ने मेरे मन को खूब भाया। मैंने योग और ध्यान के साथ, कुछ साहसी गतिविधियों जैसे रिवर रैफ्टिंग और बंजी जंपिंग का भी आनंद लिया। ये एडवेंचर स्पोर्ट्स मेरे यात्रा के सबसे यादगार पल रहे,

जिन्होंने मेरे रोमांच को दोगुना कर दिया।

अगले चरण में, मैं बद्रीनाथ के लिए बढ़ा। रास्ते में पहाड़ी दृश्य और खूबसूरत नजारें देखने को मिले। बद्रीनाथ के दिव्य मंदिर में जाकर मुझे आध्यात्मिक शांति मिली। रास्ते में कई रोड वाले गड्ढे भी देखने को मिले और बाद में मैं छोटे गांवों में रुककर स्थानीय संस्कृति का अनुभव किया और अपना शरीर को तरोताजा किया।

आखिरी पड़ाव था केदारनाथ, जो मेरी यात्रा का शिखर था। ऊबड़–खाबड़ पहाड़ी रास्ते और ऊंचाईयों को पार करते हुए, मैं वहां पहुंचा और मंदिर की भव्यता और शांति का अनुभव किया। इस जगह ने मेरे अंदर एक अद्भुत श्रद्धा और आत्मिक शांति का संचार किया।

इस यात्रा में मैंने स्थानीय व्यंजन चखे, एडवेंचर स्पोर्ट्स का आनंद के साथ कई बार विश्राम भी किया। रिवर रैफ्टिंग और बंजी जंपिंग जैसे रोमांचक अनुभवों ने मेरी यात्रा को और भी रोचक बना दिया।

इस सोलो यात्रा ने न सिर्फ मेरी राइडिंग स्किल्स को बढ़ावा दिया, बल्कि मुझे प्रकृति, साहस और आध्यात्मिकता का गहरा अनुभव भी कराया। यह पल हमेशा के लिए मेरी यादें बन गए हैं और इस यात्रा ने मुझे जीवन के नए दृष्टिकोण से जोड़ा है।

इस यात्रा ने न केवल मेरी श्रद्धा को मजबूत किया, बल्कि जीवन में शांति और स्पष्टता भी आई है। मैं इन आशीर्वाद और अनुभवों के लिए हृदय से आभारी हूँ। यह यात्रा मेरे जीवन का एक अनमोल अध्याय है, जिसे मैं सदैव संजोकर रखूंगा।

सोमला राजशेखर रेड्डी
प्लानिंग अनुभाग 3 व 4

आइए! पारिभाषिक शब्दावली सीखें!

1. Article - अनुच्छेद
   Section - धारा
   Clause - खंड
   Provision - प्रावधान
   Proviso - परंतुक
   Rule - नियम
   Regulation - विनियम
   Bill - विधेयक
   Act - अधिनियम
   By Law - उपविधि
2. Letter - पत्र
   Circular - परिपत्र
   Memo - मेमो
   Memorandum - ज्ञापन
   Notice - सूचना
   Note - टिप्पणी
   Draft - प्रारुप/आलेख/मसौदा
3. Attestation - साक्ष्यांकन
   Certification - प्रमाणन
   Authentication - अधिप्रमाणन
   Verification - सत्यापन
4. Dismiss - बरखास्त करना
   Discharge - मुक्त करना
   Remove - हटाना
   Suspend - निलंबित करना
5. Acceptance - स्वीकृति
   Approval - अनुमोदन
   Assent - सम्मति
   Consent - सहमति
   Permission - अनुमति

स्वागत एवं विदाई

कार्यग्रहण

श्रीमती विनोद कुमारी
तकनीशियन/बी, ईएमयू–1 व 2

श्री सचिन अशोक सोनवाने
तकनीशियन/बी, एमएमयू–1 व 2

श्री सौशिक मोंडल
एसओ/सी, प्रचालन–1 व 2

श्री भास्कर बाछड़
एसओ/सी,एफएचयू–1 व 2

श्री पुष्पेन्द्र कुमार गोयल
एसओ/सी,एसएमयू–1 व 2

श्री अनुज राव
एसओ/सी,प्रचालन–1 व 2

श्री श्रीकांत पांडुरंग चंदन,
एसओ/सी,सीएमयू–1 व 2

श्री अरुण कुमार
एसओ/सी,एमएमयू– 1 व 2

श्री मोगिलि राहुल
एसओ/सी,एमएमयू– 1 व 2

श्री शैलेंद्र कुमार
तकनीशियन/बी,सीएमयू–1 व 2

श्री लेखराज कुमार
तकनीशियन/बी,एफएचयू–1 व 2

श्री नरेन्द्र मीना
तकनीशियन/बी,एफएचयू–1 व 2

सुश्री अंकिता कुमारी
उप प्रबंधक (मा.सं.),
मानव संसाधन

श्री देवाशिष राउल
उप प्रबंधक (मा.सं.),
मानव संसाधन

श्री संकेत अजय गावंडे
उप प्रबंधक (मा.सं.),
मानव संसाधन

श्री सुकांत चौधरी
उप प्रबंधक (मा.सं.),
मानव संसाधन

श्री विमल सिंह चौहान
वरिष्ठ तकनीशियन/एच,
ईएमजी टाऊनशिप

सुश्री डिम्पी विनोदभाई महेरिया
उप प्रबंधक,वित्त एवं लेखा

श्री प्रशांत पाठक
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, मा.सं. (रा.भा.)

श्री रंजीत सिंह
एसए/बी,एसएमयू–1 व 2

श्री आदित्य राघव
ता नर्स/ए, चिकित्सालय

श्री मो. उबैद आलम
उप प्रबंधक, सीएमएम

सुश्री प्रिया गुप्ता
उप प्रबंधक, मानव संसाधन

श्री करमुर रमेश कारु
एसए/सी, ओ. संरक्षा–1 व 2

श्री भावेश प्रह्लादभाई भावसर
एसए/सीओ. संरक्षा–1 व 2

श्री श्याम शर्मा
सहायक ग्रेड (मा.सं)

श्री अंकित चौरसिया
उप प्रबंधक, वित्त एंव लेखा विभाग

श्री अनुरीघ मोड़क
सहायक ग्रेड–I, मानव संसाधन

श्री प्रीतम सूर
एसओ/सी, प्रचालन–1 व 2

श्री सौरभ एस. जिलेपल्लीवर
एसओ/सी, एसएमयू–3 व 4

श्री आशुतोष यादव
एसओ/सी, एफएचयू–3 व 4

श्री कुमार शानू
एसओ/सी, प्रचालन–1 व 2

श्री साकेत तामराकर
एसओ/सी, एफएचयू–3 व 4

श्री वांकुडोथ सतीश
एसओ/सी, एफएमयू–3 व 4

श्री आशीष कुमार
तकनीशियन/बी, एमएमयू–3 व 4

श्री सुमित कुमार साह
तकनीशियन/बी, एमएमयू–3 व 4

श्री संजय कुमार मालवीय
स्थल निदेशक

श्री स्वदेश मित्तल
एसओ/एच, प्रबंधन

श्री पुतान सिंह तोमर
उप महाप्रबंधक (मा.स.)
मानव संसाधन

श्री भूषण शांताराम सोनार
तकनीशियन/बी, एमएमयू–3 व 4

श्री मनीष कुमार
केंद्र रसायनज्ञ,
रसा. प्रयोगशाला–3 व 4

श्री चंद्रशेखर रमेश सोलंके
तकनीशियन/बी, प्रचालन–3 व 4

सुरेन्द्र कु. मिश्र
भौतिज्ञ 3 व 4, रिएक्टर भौतिकी 3 व 4

श्री अरुण कुमार
एसए/बी, एसएमयू–3 व 4

स्थानांतरण

श्री एस.बी. गोरपड़े
वैज्ञानिक अधिकारी/एफ,सीएमयू–1 व 2
टीएपीएस–3 व 4 में

श्री धनपाल राजू
वैज्ञानिक सहायक/एफ,क्यूए–3 व 4
कैगा–5 व 6में

श्री नरेन्द्र कुमार मित्तरवाल
उत्कृष्ट वैज्ञानिक,प्रबंधन
मुख्यालय मुंबई में

श्री ए.एन. ठाकुर
वैज्ञानिक अधिकारी/एच,प्रबंधन
आरएपीपी–7 व 8में

श्री सिद्धांत ए. पवार
प्रबंधक (मा.सं.),मानव संसाधन
कैगा स्थल में

श्री आशीष शुक्ला
वैज्ञानिक अधिकारी/ई,योजना–3 व 4
जीएचएवीपी में

श्री सुभाष बी. डब्राबाद
वैज्ञानिक सहायक/जी,क्यूए–3 व 4
कैगा–5 व 6

श्री रतन लाल
तकनीशियन/एफ,एमएमयू–3 व 4
आरएपीपी–7 व 8 में

श्री सत्य प्रकाश
ए तकनीकी अधिकारी/जी,
एमएमयू–1 व 2
टीएपीएस–3 व 4 में

श्री राजेश बी. बिंघलाने
वैज्ञानिक अधिकारी/एफ, आरई–3 व 4
कैगा–5 व 6

श्री जिंकाला यज्ञेश्वर
सहायक ग्रेड–1, सीएमएम
एमएपीएस में

श्री अरिहंत गुप्ता
वैज्ञानिक सहायक/डी,
सीएमयू–3 व 4
आरएपीपी–7 व 8 में

स्थानांतरण

श्री नरेश चंद
तकनीशियन/डी, प्रचालन–3 व 4
आरएपीपी–7 व 8 में

श्री आर. दास
वैज्ञानिक अधिकारी/एच,
रिएक्टर भौतिकी–3 व 4
मुख्यालय मुंबई में

श्री संतोष कुमार बंदूनी
वैज्ञानिक अधिकारी/ई,
एफएचयू–1 व 2
आरएपीपी–7 व 8 में

श्री आकाश कनौजिया
एवैज्ञानिक सहायक/डी,
प्रचालन–3 व 4
कैगा–1 व 2 में

श्री अमित पुरोहित
वैज्ञानिक सहायक/एफ,
एफएचयू–3 व 4
आरएपीपी–7 व 8 में

समयपूर्व सेवानिवृत्ति/त्यागपत्र

श्री शुभव्रत खुंटिया
वैज्ञानिक अधिकारी/ई,प्रचालन–3 व 4
02/08/2024

डॉ. संजय डी. कावा
चिकित्सा अधिकारी/जी,चिकित्सालय
03/10/2024

डॉ. संजय बोराह
चिकित्सा अधिकारी/जी,चिकित्सालय
02/08/2024

डॉ. रत्नाकरम सत्यानंद राजु
चिकित्सा अधिकारी/सी चिकित्सालय
24/12/2024

सेवानिवृत्ति

संजय कुमार देशमुख
सह निदेशक (ई–यूएस),
प्रबंधन

बिपिन भाई आर. पटेल
वरि. अनु. अभियंता (सि),
एसएमयू–1 व 2

श्री धनसुखभाई डी. चौधरी
फोरमैन/डी, एम.एन.यू.–1 व 2

श्री प्रभुहरदासडी. माकेलकर
सहायक फोरमैन,
औद्योगिक संरक्षा –1 व 2

श्री के.जी. खेंगार
वरि. प्रबंधक (सीएमएम),
सीएमएम

श्री सुरेश कुमार एन. चौहान
तकनीकी पर्यवेक्षक/ए,
ई.एम.यू.–1व2

श्री बंकिमचंद्र आर. चौधरी
वैज्ञा. अधिकारी/एफ,
यांत्रिकी –3 व 4

श्री मुहम्मद मुनीर अंसारी
प्रमुख (मानव संसाधन),
प्रबंधन

श्री अशोक कुमार सिंह
वैज्ञा. अधिकारी/जी,
एम.एम.यू.–1 व 2

श्री एच. आर. चौधरी
फोरमैन/सी,एम.एम.यू.–1 व 2

श्रीमती नीता पी. माकेलकर
वरि. सहा. ग्रेड–2,
ईएमयू.–1व2

श्री बी.एस. साहू
केंद्र रसायनज्ञ, रसा.
प्रयोगशाला–1 व 2

श्री पी. डी. भावसार
अधिशासी सहायक,वित्त एवं लेखा

श्री प्रदीप कुमार भार्गव
फोरमैन/सी, प्लानिंग–3 व 4

श्री एस. पी. चौधरी
मुख्य स अभियंता (सि.), सिविल–3 व 4

श्री देशराम एस. लोध
फोरमैन/ए, औ.
संरक्षा–3 व 4

श्री एम. बी. गोहिल
फोरमैन/बी,औ. संरक्षा–3 व 4

श्री एन.जे. केवट
मुख्य अभियंता (आईटी एवं सी)

श्री हरिकिशन वाल्मिकि
कार्य सहायक–बी,
ईएमजीएसओ/सी, एफएचयू–3 व 4

श्री ए. जे. पटेल
वैज्ञा. अधिकारी/एफ,
एसएमयू–3 व 4

श्री कैलाश नाथ जैसवार
वरि. सहायक ग्रेड–2,
मानव संसाधन

अधिवर्षिता पर वृक्षारोपण करते हुए सेवानिवृत कार्मिक

श्री संजय कुमार देशमुख,
सह निदेशक (ई एवं यूएस), प्रबंधन

श्री विपिन भाई आर. पटेल,
वरि. अनु. अभियंता (सि),एसएमयू–1 व 2

श्री धन सुखभाई डी. चौधरी,
फोरमैन/डी, एम.एम.यू.–1 व 2

श्री प्रभ हरदास डी. माकेलकर,सहायक फोरमैन,
औधोगिक संरक्षा–1 व 2

श्री बंकिमचंद्र आर. चौधरी,
वैज्ञा. अधिकारी/एफ, यांत्रिकी–3 व 4

श्री के.जी. खेंगार,वरि. प्रबंधक (सीएमएम),
सीएमएम

श्री सुरेश कुमार एन. चौहान,
तकनीकी पर्यवेक्षक/ए,ई.एम.यू.–1 व 2

श्री अशोक कुमार सिंह, वैज्ञा. अधिकारी/जी,
एम.एम.यू.–1 व 2

श्री मुहम्मदमुनीर अंसारी,
प्रमुख (मानव संसाधन),प्रबंधन

श्री हरिसिंगभाई आर. चौधरी,
फोरमैन/सी,एम.एम.यू.–1 व 2

श्रीमती नीता पी. माकेलकर, वरि. सहा. ग्रेड–2,
ईएमयू.–1व2

श्री बी.एस. साहू, केंद्र रसायनज्ञ,
रसा. प्रयोगशाला–1 व 2

अधिवर्षिता पर वृक्षारोपण करते हुए सेवानिवृत कार्मिक

श्री सर्वेश्वर प्रसाद चौधरी,मुख्य अभियंता (सि.),सिविल–3 व 4

श्री प्रशांत डी. भावसार, अधिशासी सहायक, वित्त एवं लेखा

श्री प्रदीप कुमार भार्गव, फोरमैन/सी,साईट प्लानिंग–3 व 4

श्री नितिन चंद्र जे. केवट, मुख्य अभियंता (आईटी एवं सी),

श्री अरविंद भाई जे. पटेल, वैज्ञा. अधिकारी/एफ, एसएमयू–3 व 4

श्री कैलाश नाथ जैसवार, वरि. सहायक ग्रेड–2,मानव संसाधन

श्री मनुभाई बी. गोहिल, फोरमैन/बी, औ. संरक्षा–3 व 4

श्री देशराम एस. लोध, फोरमैन/ए,औ. संरक्षा–3 व 4

श्री हरिकिशन एच. वाल्मिकि, कार्य सहायक–बी, ईएमजी

MK OFFSET # 903 908 26 45